ह़ज्ज से संबंधित दस (10) उपदेश

عَشْرُ خُطَبٍ عَنْ مَوْسِمِ الحَجِّ

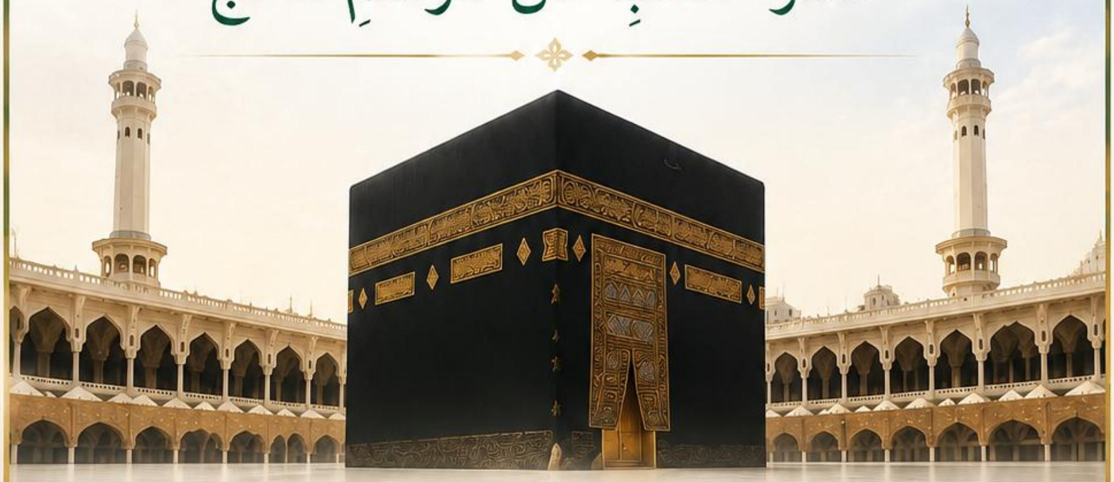

लेखक:
ख़ालिद पिता मुहम्मद अ़ंतीयह

अनुवादक:
तारिक़ बदर सनाबिली

ह़ज्ज से संबंधित दस (10) उपदेश

عَشْرُ خُطَبٍ عَنْ مَوْسِمِ الحَجِّ

اللغة الهندية

लेखक:

ख़ालिद पिता मुह़म्मद अ़तीयह

अनुवादक:

तारिक़ बदर सनाबिली

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ह़ज्ज से संबंधित दस (10) उपदेश

01. ज़िल्ह़िज्जा के महीने की श्रेष्ठता

02. ह़ज्ज की तपस्या की श्रेष्ठता

03. पैग़म्बर ﷺ के ह़ज्ज का तरीक़ा

04. अ़रफ़ा के दिन की श्रेष्ठता

05. (पैग़म्बर ﷺ के) अंतिम उपदेश के निर्देश

06. ह़ज्ज के पश्चात क्या करें ?

07. हिजरी वर्ष का समापन

08. ई़द-उल-अज़ह़ा का उपदेश (01)

09. ई़द-उल-अज़ह़ा का उपदेश (02)

10. ई़द-उल-अज़ह़ा का उपदेश (03)

प्रथम उपदेश

ज़िल्ह़िज्जा के महीने की श्रेष्ठता

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله الذي خلق كل شيء فقدره تقديراً، الحمد لله الذي جعل الإسلام خير شرعة وأفضل منهج للإنسانية، الحمد لله الذي جعل الإسلام خاتم الأديان وأسهل طرق العيش للحياة الدنيوية.

وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له الواحد الأحد الفرد الصمد الذي لم يلد ولم يولد ولم يكن له كفوا أحد، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله وصفيه وخليله وخيرته من خلقه ﷺ وعلى أتباعه الى يوم الدين، أما بعد!

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तो! मैं स्वयं अपने आप को तथा आप सभी को सर्वशक्तिमान अल्लाह से सदैव डरते रहने की सलाह देता हूं, अतः आप सभी लोग छिपे-खुले सभी स्थितियों में उससे डरते रहिए और अपने प्रत्येक कार्य में उसे ध्यान में रखिए परिणाम स्वरुप आप सफ़ल हो जाएंगे, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَقُولُواْ قَوۡلٗا سَدِيدٗا٧٠ ﴾

अर्थात: (ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! सर्वशक्तिमान अल्लाह से डरते रहो तथा सीधी एवं सच्ची बात करो...)

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तो! आप सभी को ज्ञात होना चाहिए कि आप लोग वर्ष के सर्वश्रेष्ठ दिनों में हैं, जो ज़िल्हिज्जा के महीने के आरंभिक दस दिन हैं जिनके संबंध में पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "ज़िल्हिज्जा के दस दोनों की तुलना में अन्य कोई ऐसे दिन नहीं जिनमें किए गए पुण्य सर्वशक्तिमान अल्लाह को इन दिनों से अधिक प्रिय हों, लोगों ने प्रश्न किया: हे अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ! सर्वशक्तिमान अल्लाह के लिए जिहाद (धर्म युद्ध) करना भी नहीं? आपने उत्तर देते हुए कहा: सर्वशक्तिमान अल्लाह के लिए जिहाद (धर्म युद्ध) करना भी नहीं, उस व्यक्ति को छोड़कर जो अपना प्राण तथा धन संपत्ति दोनों लेकर अल्लाह के लिए निकले फिर वह किसी भी चीज़ के साथ वापस नहीं आए।"

इन दिनों के संबंध में इसके अतिरिक्त पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "सर्वशक्तिमान अल्लाह की दृष्टि में ज़िल्हिज्जा के दस दोनों से बढ़कर कोई भी दिन महान नहीं और ना ही इनके अतिरिक्त किसी और दिन में किए गए पुण्य इतने अधिक प्रिय हैं, इसलिए इन दिनों में अधिक से अधिक 'लाइलाह-इल्लल्लाह, (لا إله إلا الله) अल्ला-हु-अकबर (الله أكبر) एवं अल्हम्दुलिल्लाह (الحمد لله) पढ़ा करो।"

इसके अतिरिक्त पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "ज़िल्हिज्जा के दस दिन संसार के समस्त दिनों में सर्वश्रेष्ठ दिन हैं, लोगों ने प्रश्न किया: सर्वशक्तिमान अल्लाह के मार्ग में जिहाद (धर्म युद्ध) करना भी उनके सामान नहीं है? अपने उत्तर दिया: नहीं, उस व्यक्ति को छोड़कर जिसने अल्लाह के लिए युद्ध करते हुए अपना प्राण त्याग दिया हो तथा अपना मुखड़ा मिट्टी में लथपथ कर लिया हो।"

सहाबा रज़ियल्लाहुअंहुम में से किसी का कथन है: "सर्वशक्तिमान अल्लाह ने समय का चयन किया है, और उसके निकट चार पवित्र महीने अधिक प्रिय हैं, इन पवित्र महीनों में भी ज़िल्हिज्जा का महीना अधिक प्रिय है, और इस महीने में भी इसके आरंभिक दस दिन सबसे अधिक प्रिय हैं।"

महान विद्वानों का कहना है: “वर्ष के अन्य दिनों की तुलना में ज़िल्हिज्जा के इन दस दोनों को सर्वश्रेष्ठ इसलिए बनाया गया क्योंकि इनमें नमाज़, उपवास, दान-पुण्य, हज्ज, क़ुर्बानी (पशुओं की बलि देना), स्मरण आदि उपासना तथा आराधना के सभी प्रकार एकत्रित हो जाते हैं, विशेष कर ऐसे व्यक्ति के लिए जो पवित्र प्रदेश मक्का में ठहरा हुआ हो उसके लिए समय तथा स्थान से संबंधित समस्त प्रकार की श्रेष्ठता एकत्रित हो जाती है।

पवित्र ग्रंथ क़ुरआन में सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَٱلْفَجْرِ ۝١ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝٢ وَٱلشَّفْعِ وَٱلْوَتْرِ ۝٣﴾

अर्थात: (क़सम है फ़ज्र (प्रातः) के समय की और दस रात्रियों की और विषम तथा सम की।) इन श्लोकों के संबंध में महान विद्वानों का कहना है: दस रात्रियों का अर्थ ज़िल्हिज्जा के आरंभिक दस दिन हैं, यही वह सही अर्थ है जिससे क़ुरआन के अतीत के व्याख्याकारों में से अधिकांश लोग सहमत हैं, और यही अर्थ इब्न-ए-अ़ब्बास रज़ियल्लाहुअंहुमा से भी वर्णित है।

इसलिए प्रिय मुस्लिम भाई! समय से लाभान्वित होने, भलाईयों तथा कृपाओं को अर्जित करने के मौसम से लाभ उठाने और पुण्य तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह की निकटता प्राप्त करने हेतु शीघ्रता से काम लें, अच्छाइयों एवं सुकर्मों के माध्यम से सर्वशक्तिमान अल्लाह की निकटता प्राप्त करें, इन महान दिनों में अधिक से अधिक उपवास रखने, रातों में तहज्जुद की नमाज़ अदा करने और यथासंभव सर्वशक्तिमान अल्लाह के लिए अधिक से अधिक उपासना एवं पूजा करने का प्रयास करें और जिस व्यक्ति के लिए ऐसा करना संभव नहीं हो वह प्रत्येक समय सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करता रहे यहां तक कि उसके लिए पुण्य लिख दिया जाए।

उम्महातुल्-मोअमिनीन (विश्वासियों की माताओं) में से किसी एक से एक ह़दीस वर्णित है: “पैग़म्बर ﷺ ज़िल्हिज्जा के महीने का नौ, आ़शूरा का एक, प्रत्येक महीने के तीन एवं महीने के पहले सोमवार एवं गुरुवार को उपवास रखते थे।”

जो व्यक्ति इन सभी उपवासों को रखने में सक्षम ना हो तो उसके लिए केवल अ़रफ़ा के दिन का उपवास रखना पर्याप्त होगा जिसकी श्रेष्ठता के संबंध में पैग़म्बर ﷺ का कथन है: “अ़रफ़ा के दिन के उपवास के संबंध में मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से आशा रखता हूं कि वह इस एक उपवास के कारण एक साल अगले तथा एक साल पिछले पापों को क्षमा कर देगा। अ़रफ़ा के दिन का उपवास ऐसे व्यक्तियों के लिए सुन्नत है जो ह़ज्ज की यात्रा पर ना हों, रही बात ह़ज्ज यात्रियों की तो उनके हित में यही श्रेष्ठ है कि वो उपवास ना रखें ताकि ह़ज्ज से संबंधित जो क्रियाएं हैं उन्हें भली-भांति संपन्न करने के लिए सशक्त रहें और प्रत्येक समय सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करते रहें।

ऐसे ही इन दिनों की श्रेष्ठता इस प्रकार भी है कि इन दिनों में कुछ ऐसे निर्धारित दिन हैं जिनमें सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने वरदान किए गए पशुओं पर स्मरण करने का विधान किया है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَأَذِّن فِي ٱلنَّاسِ بِٱلْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۝٢٧ لِّيَشْهَدُواْ مَنَٰفِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُواْ ٱسْمَ ٱللَّهِ فِيٓ أَيَّامٍ مَّعْلُومَٰتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّنۢ بَهِيمَةِ ٱلْأَنْعَٰمِ ۖ فَكُلُواْ مِنْهَا وَأَطْعِمُواْ ٱلْبَآئِسَ ٱلْفَقِيرَ ۝٢٨﴾

अर्थात: (और लोगों में ह़ज्ज के लिए घोषणा कर दे, लोग तेरे पास पैदल आएंगे एवं दुबले-पतले ऊंटों पर भी, और दूर के क्षेत्रों से भी आएंगे, अपने लाभ की प्राप्ति करने को आ जाएं और निर्धारित दिनों में अल्लाह के नाम का स्मरण करें उन

पशुओं पर जो पालतू हैं, फिर स्वयं तुम भी खाओ एवं निर्धन लोगों को भी खिलाओ।) अत्यधिक विद्वान इस बात पर सहमत है कि इन निर्धारित दोनों का अर्थ ज़िल्हिज्जा ही के दस दिन हैं, इसी प्रकार इन दिनों की श्रेष्ठता यह भी है कि इनमें ईद-उल-अज़्हा की नमाज़ अदा की जाती है एवं व्यापक उपदेश को ध्यानपूर्वक सुना जाता है।

प्रिय मुस्लिम भाई! इन दस दिनों के अच्छे कामों में से एक काम यह भी है कि इन सभी दिनों में निम्नलिखित शब्दों के माध्यम से सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करते रहना चाहिए:

اللهُ أكبرُ، اللهُ أكبرُ، اللهُ أكبرُ، لا إلهَ إلّا اللهُ، اللهُ أكبرُ، اللهُ أكبرُ، وللهِ الحمدُ.

अर्थात: "अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा केवल उसी के लिए है।" इन शब्दों को उच्च स्वर के साथ बाजारों में, मस्जिदों में एवं रास्तों पर पढ़ना पुनीत है।

ह़दीस के ग्रंथों में पैग़म्बर ﷺ से वर्णित है, उन्होंने कहा: अर्थात: "कअ़बह का चक्कर लगाने, सफ़ा तथा मरवा के बीच दौड़ लगाने एवं कंकरी मारने का आदेश केवल इसलिए हुआ है ताकि सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का स्मरण किया जा सके।

मुसनद अहमद में उल्लिखित है: एक व्यक्ति ने कहा: हे पैग़म्बर ﷺ! किस प्रकार का जिहाद (धर्म युद्ध) करने से अधिक पुण्य प्राप्त होगा? पैग़म्बर ﷺ मैं उत्तर देते हुए कहा: जिसमें सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे अधिक हो, प्रश्न करने वाले ने फिर प्रश्न किया: किन उपवास रखने वालों का पुण्य सबसे अधिक है? पैग़म्बर ﷺ ने उत्तर दिया: जो सर्वशक्तिमान अल्लाह का सबसे अधिक स्मरण करें, फिर नमाज़, ह़ज्ज और ज़कात का उल्लेख हुआ, और हर बार पैग़म्बर ने यही उत्तर दिया: जिसमें सर्वशक्तिमान अल्लाह का अधिक से अधिक स्मरण हो, इस पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहुअंहु उ़मर रज़ियल्लाहुअंहु से कहने लगे कि अबू-ह़फ़्स! स्मरण करने वालों ने तो प्रत्येक प्रकार की भलाई अर्जित कर ली, पैग़म्बर ﷺ ने फ़रमाया: जी हां।"

एक वर्णन जिसमें यह प्रश्न है कि कौन सा ह़ाजी सर्वश्रेष्ठ है? तो आपने उत्तर दिया: जो सर्वशक्तिमान अल्लाह का सबसे अधिक स्मरण करता हो। एक अन्य वर्णन है जिसमें प्रश्न हुआ: किस ह़ाजी को सबसे महान पुण्य मिलेगा? तो आपने उत्तर दिया: जो सर्वशक्तिमान अल्लाह का सबसे अधिक स्मरण करता हो।

मेरे भाइयो! इन दस दिनों से संबंधित एक नियम यह भी है कि इनके अंत में पशुओं के बलिदान दिए जाएं और इसके विधि-विधान को पैग़म्बर ﷺ ने अपने कथन से स्पष्ट किया है: "जब तुम इन दस दिनों में प्रवेश कर जाओ और तुम में से किसी को पशु का बलिदान देने की इच्छा हो तो वह अपने बाल एवं चमड़े के साथ छेड़-छाड़ ना करे (नहीं काटे)।"

एक वर्णन कुछ इस प्रकार है: "जब कोई व्यक्ति इन दस दिनों में प्रवेश कर जाए एवं उसके पास बलिदान देने के लिए पशु हो तो वह अपने बाल एवं नाख़ून नहीं काटे।"

एक और वर्णन में है: "जब कोई व्यक्ति ज़िल्हिज्जा के दस दिनों में प्रवेश कर जाए तो वह अपने पशु का बलिदान देने से पूर्व अपने बाल एवं नाख़ून नहीं काटे।"

उपरोक्त उल्लिखित ह़दीसों के सारांश का तात्पर्य यही है कि जिस व्यक्ति ने बलिदान देने के लिए पशु मोल लिया हो तथा बलिदान देने के उद्देश्य से उसका पालन-पोषण किया हो तो उसके ऊपर अनिवार्य है कि वह अपने शरीर के किसी भी अंग का बाल नहीं काटे एवं ना ही अपने नाख़ून काटे यहां तक कि वह अपने पशु का बलिदान दे दे।

रही बात ऐसे व्यक्ति की जिसने बलिदान देने की इच्छा तो की परंतु पशु को मोल लेने में वह असमर्थ तो केवल इच्छा करने के कारण उसे किसी प्रकार का पाप नहीं लगेगा। बलिदान देना एक सुन्नत-ए-मुअक्किदह (ऐसा काम जिसे दृढ़ रूप से करने के लिए कहा गया हो) है, इसलिए अल्लाह के भक्तो! यदि आप बलिदान देने के लिए पशु मोल लेने में सक्षम हैं तो फिर इसे लेने से पीछे नहीं हटिए।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين ولا عدوان إلا على الظالمين، وأشهد أن لا إله إلا الله ولي الصالحين، وأشهد ان محمداً عبده ورسوله صلوات ربي وسلامه عليه وعلى آله وأتباعه إلى يوم الدين، أما بعد!

मेरे मुस्लिम भाई! इन दस दिनों की विशेषताओं में से सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इनमें ईद-उल-अज़्हा के दिन पशुओं की बलि दी जाती है जो एक ऐसा पुण्य है जिसके माध्यम से सर्वशक्तिमान अल्लाह की निकटता प्राप्त होती है। बलिदान देने की प्रक्रिया ईद-उल-अज़्हा की सुबह से आरंभ होती है और इस महीने की 13 वीं तिथि तक जारी रहती है, परंतु आप इस काम को जितनी जल्दी संपन्न करेंगे उतनी अधिक श्रेष्ठता आपको प्राप्त होगी, पैग़म्बर ﷺ का इस संबंध में कथन है: "नह़्र के दिन (पशु को बलि देने के दिन) सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट एक व्यक्ति का सबसे प्रिय कार्य रक्त बहाना है, प्रलय दिवस में बलिदान के पशु अपनी सींगों, बालों तथा खुरों के साथ आएंगे, बलिदान का रक्त धरती पर गिरने से पूर्व ही स्वीकार्य का स्थान प्राप्त कर लेता है, इसलिए हर्षित होकर बलिदान दिया करो।"

बलिदान देने के संबंध में पैग़म्बर ﷺ ने अपने कथन से मार्गदर्शन दिया है: "जब कोई व्यक्ति इन दस दिनों में प्रवेश कर जाए एवं उसके पास बलिदान देने के लिए पशु हो तो वह अपने बाल एवं नाख़ून नहीं काटे।" एक और वर्णन में है: "जब कोई व्यक्ति ज़िल्हिज्जा के दस दिनों में प्रवेश कर जाए तो वह अपने पशु का बलिदान देने से पूर्व अपने बाल एवं नाख़ून नहीं काटे।" इस संबंध में आप ﷺ का एक मार्गदर्शन यह भी है कि बलिदान दिए गए पशुओं में से एक तिहाई भाग को अपने खाने पीने के लिए उपयोग करना चाहिए, एक तिहाई भाग को उपहार के रूप में वितरण कर देना चाहिए तथा एक तिहाई भाग को दान-पुण्य के रूप में वितरण कर देना चाहिए।

अल्लाह के भक्तो! समस्त पैग़म्बरों के सरदार, महान कृपालु, मार्गदर्शक और प्रदान किए गए वरदान स्वरुप पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजिए जैसा कि आप सभी को महान विद्वान एवं महा-ज्ञानी ने अपने कथन के माध्यम से आदेश दिया है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦ ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजते हैं, ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! तुम लोग भी उन पर दरूद भेजो और बहुत अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।)

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! ह़ाजियों के ह़ज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

द्वितीय उपदेश

ह़ज्ज की तपस्या की श्रेष्ठता

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله رب العالمين دائماً وأبداً، نحمده سبحانه ونشكره ونستغفره ونستعينه ونستهديه ونؤمن به ونتوكل عليه، والصلاة والسلام على سيد الغر المحجلين وإمام المتقين سيدنا ونبينا محمد ﷺ وعلى آله وأتباعه إلى يوم الدين، أما بعد!

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तो! मैं स्वयं अपने आप को तथा आप सभी को सर्वशक्तिमान अल्लाह से सदैव डरते रहने की सलाह देता हूं, अतः आप सभी लोग छिपे-खुले सभी स्थितियों में उससे डरते रहिए और अपने प्रत्येक कार्य में उसे ध्यान में रखिए परिणाम स्वरुप आप सफ़ल हो जाएंगे, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَقُولُواْ قَوْلًا سَدِيدًا٧٠ ﴾

अर्थात: (ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! सर्वशक्तिमान अल्लाह से डरते रहो तथा सीधी एवं सच्ची बात करो...)

अल्लाह के भक्तो! आपको ज्ञात होना चाहिए कि ह़ज्ज की इ़बादत मुसलमानों के बीच एक ऐसा शक्तिशाली बंधन है, जिसमें एक ही समय में, एक ही स्थान पर एवं एक ही वस्त्र में सभी लोगों को एकजुट करता है और सारे लोग एक ही दिशा (क़िब्ला) की ओर होते हैं तथा सभी लोग एक ही धर्म को मानते हैं और उनके विधि-विधान का स्रोत भी एक ही है, ऐसी स्थिति में सभी के सभी लोग यह कहते हुए एक पालनहार की पूजा-आराधना करते हैं:

لبيك اللهم لبيك، لبيك لا شريك لك لبيك، إن الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك.

अर्थात: "हे अल्लाह हम उपस्थित हैं, हम उपस्थित हैं, तेरा कोई साझीदार नहीं, हम उपस्थित हैं, समस्त प्रकार की प्रशंसा, वरदान तथा शासन तेरे ही लिए है, तेरा कोई साझीदार नहीं।"

ह़ज्ज इस्लाम धर्म का सबसे महान प्रदर्शन है और यह एक ऐसा स्वर्णिम अवसर होता है जिसमें सभी मुसलमान एक कथन के आधार पर एकत्रित होते हैं, एक ही समय में वर्ष में एक बार सभी लोग एक ही कर्म को पूरा करते हैं, इस प्रकार यह उन चुनौतियों और संकटों पर पुनर्विचार करने और नए दृष्टिकोण तथा विचार साझा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर होता है जिनका मुस्लिम समुदाय के लोग अपने शत्रुओं तथा घात लगाए बैठे लोगों की ओर से सामना कर रहे हैं।

वर्ष में एक बार मुसलमान के लिए ह़ज्ज का समय आता है। अल्लाह के पवित्र घर कअ़बह तथा पवित्र महीने के सम्मान के प्रति ह़ाजियों तथा वहां के निवासियों के लिए कुछ नियम तथा सुन्नतें हैं जिनका पालन करना उनके ऊपर अनिवार्य है।

मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आपको ज्ञात होना चाहिए कि आपके ऊपर अल्लाह के पवित्र घर कअ़बह के प्रति तथा स्वयं आपके प्रति कुछ अधिकार तथा कर्तव्य हैं, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण हैं जो निम्नलिखित हैं:

1. अल्लाह के पवित्र घर कअ़बह का एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह द्वारा निर्धारित नियमों का सम्मान करना, और आपको इस बात से सावधान रहना चाहिए कि सर्वोच्च तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह आपको किसी ऐसी स्थिति में देख ले जो उसकी

दृष्टि में अप्रिय हो अथवा वह आपसे क्रोधित हो जाए फिर इसके कारण आपका ह़ज्ज बर्बाद हो जाए, उसे स्वीकृति ना दे फिर आपका प्रयास और आपकी तपस्याएं नष्ट हो जाएं।

2. मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आप यथासंभव इस बात का प्रयास करें कि अल्लाह के पवित्र घर कअ़बह में रहकर उससे लाभान्वित होते हुए अधिक से अधिक उसका चक्कर लगाएं, उसमें नमाज़ अदा करें, अल्लाह का स्मरण करें, अपने पापों की क्षमा मांगे एवं जो समय आपको मिला है उसे यथासंभव मूल्यवान बनाएं, क्योंकि ये दिन पूजा-आराधना करने के तथा अल्लाह का स्मरण करने के हैं ना कि मौज-मस्ती, पर्यटन तथा सैर-सपाटे में व्यतीत करने के हैं।

3. मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आप यथासंभव ह़ज्ज के नियम तथा उसके विधि-विधान से अवगत होने के प्रति जागरूक बनें एवं इससे संबंधित किसी भी प्रकार की कमी नहीं करें, इसलिए कि आपने बहुत ख़र्च किया है अतः आप इस संबंध में कमी करेंगे तो फिर आपने जो कुछ (समय, धन-संपत्ति तथा संघर्ष के रूप में) लगाया है वे सभी व्यर्थ हो जाएंगे, क्योंकि इन मामलों से संबंधित अज्ञानता का बहाना ह़ाजी की ओर से स्वीकार्य नहीं है, विशेष कर इस आधुनिक काल में सर्वशक्तिमान अल्लाह की कृपा से ह़ज्ज से संबंधित नियमों तथा विधि-विधानों को समझना बहुत ही सरल हो गया है। पैग़म्बर ﷺ की ह़दीस में उनका कथन है: "तुम लोग मुझसे ह़ज्ज से संबंधित नियमों को सीख लो।"

4. मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आपको ज्ञात होना चाहिए कि ह़ज्ज पापों के क्षमा का एक महत्वपूर्ण अवसर है, क्योंकि पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "जिस व्यक्ति ने ह़ज्ज किया एवं इस बीच उसने किसी प्रकार की अश्लील बात नहीं की और ना ही किसी प्रकार का पाप किया तो वह वहां से ऐसे लौटा मानो कि उसकी मां ने उसे आज ही जन्म दिया हो।" अर्थात उसके पाप क्षमा कर दिए गए और वह अपने पापों से पवित्र होकर ऐसे वापस आया जैसे उसके जन्म का दिन हो। इसलिए इस महत्वपूर्ण अवसर से लाभान्वित होते हुए आदेशानुसार प्रत्येक प्रकार के उल्लंघन से आप वंचित रहें, संभव है कि आपको दोबारा यहां आने का अवसर ना मिले, ह़ज्ज के इन उल्लंघनों में निरर्थक बातें, अश्लीलता एवं पाप शामिल हैं। इनके अतिरिक्त बातचीत करते हुए खण्डन-मंडन करना, अकड़ जाना, दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करना, धूम्रपान करना, समय बर्बाद करना, ह़ज्ज के नियमों को पूरा करने में लापरवाही करना निषिद्ध है, सबसे गंभीर वे लोग हैं जो इस पवित्र घर में चोरी, जेबकतरी, तोड़-फोड़, दंगा-फ़साद, प्रदर्शन, भीड़ जुटाने तथा नारेबाज़ी जैसी गतिविधियों के माध्यम से बुराई फैलाने आते हैं।

5. मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आपको ज्ञात होना चाहिए कि प्रत्येक समय सर्वशक्तिमान अल्लाह को ध्यान में रखना आप पर अनिवार्य है, इसलिए कि हर वह व्यक्ति जो ह़ज्ज का वस्त्र (एह़राम) पहन ले वह ह़ाजी नहीं हो जाता और हर व्यक्ति ऐसा नहीं होता जिसका ह़ज्ज स्वीकार्य हो जाए। काश मैं जान पाता कि आप का ह़ज्ज स्वीकार हुआ या नहीं। ह़ज्ज के स्वीकार्य होने का आधार पैग़म्बर ﷺ के ह़ज्ज का उसी प्रकार अनुसरण करना है जैसा कि उनके सहाबा रज़ियल्लाहुअंहुम ने बताया है, इसी प्रकार व्यवधान (बिदअत), बुराइयों तथा उल्लंघनों से दूर रहना है, जब इन सारी बातों का पालन होगा तो ह़ज्ज के स्वीकार्य होने की आशा होगी। मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! इसी प्रकार इन सारी बातों का पालन करना आपके ऊपर अनिवार्य है।

6. मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आप पवित्र मक्का में हैं जो समान रूप से समस्त स्थलों में सबसे महान स्थल है, इसलिए आप अपने अन्य ह़ाजी भाइयों के प्रति घमंड ना करें तथा अपने आप को उनकी तुलना में श्रेष्ठ ना समझें, क्योंकि ह़दीस में पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "अ़रब वासी तथा अन्य लोगों के बीच एवं गोरे तथा काले के बीच कोई अंतर नहीं है, परंतु इनके बीच अंतर का आधार केवल परहेज़गारी है।"

7. मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आप अपने घर से सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्राचीन घर की ओर तथा अपने देश से दूसरे ऐसे देश की ओर निकले हैं जहां पवित्र स्थल हैं, इसलिए सावधानी के साथ ऐसे उल्लंघनों से अपने आप को वंचित रखें जिनके कारण आपका ह़ज्ज भ्रष्ट हो जाए और आपका संघर्ष नष्ट हो जाए।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह ने वर्ष के अन्य दिनों की तुलना में कुछ दिनों को श्रेष्ठ बनाया है ताकि वह अपने भक्तों को अपनी कृपा से लाभान्वित होने के अवसर तथा क्षमा मांगने का समय प्रदान करे और आप लोग भलाई तथा कृपा-दया के सबसे महान दिनों में हैं, इसलिए इन अवसरों से लाभ उठाते हुए सर्वशक्तिमान अल्लाह की आराधना तथा पूजा करें, उसकी आज्ञा का पालन करें एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह की निकटता प्राप्त करे।

لبيك اللهم لبيك، لبيك لا شريك لك لبيك، إن الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك.

अर्थात: "हे अल्लाह हम उपस्थित हैं, हम उपस्थित हैं, तेरा कोई साझीदार नहीं, हम उपस्थित हैं, समस्त प्रकार की प्रशंसा, वरदान तथा शासन तेरे ही लिए है, तेरा कोई साझीदार नहीं।"

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين ولا عدوان إلا على الظالمين، وأشهد أن لا إله إلا الله ولي الصالحين، وأشهد ان محمداً عبده ورسوله صلوات ربي وسلامه عليه وعلى آله وأتباعه إلى يوم الدين، أما بعد!

ह़ज्ज इस्लाम का एक ऐसा महान प्रदर्शन है जिससे मुस्लिम समुदाय के लोग आपस में एक दूसरे से जुड़ जाते हैं, एक ऐसा महान विश्वसनीय यात्रा है जो परलोक दिवस की याद दिलाती है और इस्लाम का एक ऐसा महान स्तंभ है जिसके माध्यम से सारे स्तंभ संपन्न होते हैं, इसलिए जिस व्यक्ति को भी इस दायित्व को पूरा करने की शक्ति मिले उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह का आभार व्यक्त करना चाहिए और जो व्यक्ति इसे पूरा करने में असमर्थ हो उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह से प्रार्थना करना चाहिए कि वह उसे उस मक्का की ओर यात्रा कराए जहां लोग हार्दिक रूप से झुके रहते हैं और जहां पवित्र स्थल हैं। आमीन!!

अल्लाह के भक्तो! समस्त पैग़म्बरों के सरदार, महान कृपालु, मार्गदर्शक और प्रदान किए गए वरदान स्वरुप पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजिए जैसा कि आप सभी को महान विद्वान एवं महा-ज्ञानी ने अपने कथन के माध्यम से आदेश दिया है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦ ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजते हैं, ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! तुम लोग भी उन पर दरूद भेजो और बहुत अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।)

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! ह़ाजियों के ह़ज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

तृतीय उपदेश

पैग़म्बर ﷺ के ह़ज्ज का तरीक़ा

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله رب العالمين الذي جعل الإنسان أكمل خلقه، وجعل محمداً ﷺ خاتم أنبيائه و أفضل رسله، وجعل الإسلام أكمل دين وأشمل وأيسر منهج ، الحمد لله الذي هدانا وأرشدنا وكفانا وآوانا ومن كل شر وسوء وبلاء عصمنا وحفظنا، الحمد لله معز الأولياء ومذل الأشقياء، الحمد لله القائم على أمر خلقه حفظاً وتقديراً تصريفاً وتدبيراً توفيقاً وتيسيرا.

وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له إله ملك عن قدرة وأعطى عن غني وتجاوز عن فضل ويسر عن رحمة سبحانه. وأشهد أن محمداً عبد الله ورسوله النبي الإمام والمختار الهمام وخير من صلى وصام وبأمر الله قام ﷺ وعلى آله وأصحابه وأتباعه إلى يوم القيام. أما بعد!

मेरे भाइयो! मैं अपने आप को और आप सभी को सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह के कथन को सिद्ध करते हुए सदैव उससे डरते रहने की सलाह देता हूं, अल्लाह का कथन है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ خَبِيرُۢ بِمَا تَعۡمَلُونَ۝٨﴾

अर्थात: "सर्वशक्तिमान अल्लाह से डरते रहो, निःसंदेह अल्लाह तुम सभी के कर्मों से भली-भांति अवगत है।"

अल्लाह के भक्तो! प्रत्येक वर्ष इन जैसे दिनों में ह़ज्ज के सर्वप्रथम दिन जिसको 'तरवियह' का दिन कहा जाता है ह़ाजी लोग मिना प्रस्थान करने की तैयारी करते हैं, लाखों-लाख ह़ाजी लोग धरती के कोने-कोने से ह़ज्ज से संबंधित आवश्यक कर्मों को पूरा करने के लिए आते हैं। इसलिए हमारे लिए बहुत आवश्यक है कि हम अपने पैग़म्बर, समस्त मानवजाति के सरदार ﷺ के ह़ज्ज की जानकारी अर्जित करें कि उन्होंने किस प्रकार इस दायित्व को पूरा किया था ताकि हम उनका अनुसरण कर सकें, उनके पद-चिन्ह पर चल सकें, उनकी विधि को अपना सकें तथा ह़ज्ज के जो स्तंभ है उनको भली-भांति सीख सकें।

हिजरत (विरह) के दसवें वर्ष पैग़म्बर ﷺ मदीना से अल्लाह प्राचीन घर (कअ़बह) की ओर ह़ज्ज करने के लिए निकले, आपके इस ह़ज्ज का नाम 'क़िरान' था, आप अपनी 'क़सवा' नामक ऊंटनी पर सवार हुए यहां तक कि जब वह ऊंटनी 'बैदा' नामक स्थल पर पहुंची एवं आपके आस-पास लोग दृष्टि सीमा तक थे आपने एकेश्वरवाद की पुकार लगाते हुए कहा:

لبيك اللهم لبيك، لبيك لا شريك لك لبيك، إن الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك.

अर्थात: "हे अल्लाह हम उपस्थित हैं, हम उपस्थित हैं, तेरा कोई साझीदार नहीं, हम उपस्थित हैं, समस्त प्रकार की प्रशंसा, वरदान तथा शासन तेरे ही लिए है, तेरा कोई साझीदार नहीं।" और वहां उपस्थित अन्य लोगों ने भी आपके साथ यही पुकार लगाई, यहां तक कि आप कअ़बह पहुंच गए, तत्पश्चात आपने अस्दव (काले) पत्थर को छुआ फिर आप तीन बार गति के साथ चले और चार बार सामान्य चाल में चले, फिर आप 'मक़ाम-ए-इब्राहिम' नामक स्थल पर पहुंचकर सर्वशक्तिमान अल्लाह के इस कथन का सस्वरपाठ किया:

﴿ وَٱتَّخِذُواْ مِن مَّقَامِ إِبۡرَٰهِـۧمَ مُصَلّٗىۖ ﴾

अर्थात: (और तुम 'मक़ाम-ए-इब्राहिम' को नमाज़ अदा करने का स्थान बना लो।) फिर उन्होंने अपने आप को 'मक़ाम-ए-इब्राहिम' तथा कअ़बह के बीच में रखा एवं दो रकअ़त नमाज़ अदा की, दोनों रकअ़तों में आपने सूरह-ए-इख़्लास तथा सूरह-ए-नास का सस्वरपाठ किया फिर आप 'ह़ज्र-ए-अस्वद' की ओर निकले फिर उसे छुआ फिर आप एक द्वार से 'सफ़ा' नामक स्थल की ओर निकल पड़े 'सफ़ा' के निकट पहुंचे तो यह पढ़ने लगे:

﴿ إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلۡمَرۡوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِۖ ﴾

अर्थात: (सफ़ा तथा मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं।) मैं वहां से आरंभ कर रहा हूं जिसका उल्लेख सर्वशक्तिमान अल्लाह ने पहले किया है, फिर आपने 'सफ़ा' से चक्कर (दौड़ लगाना) आरंभ किया। फिर आप उस पर चढ़े यहां तक कि आपने कअ़बह को देखा तो अपना मुखड़ा उसकी ओर कर अल्लाह के एकेश्वरवाद तथा उसकी महानता का उल्लेख करने लगे और कहने लगे:

لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد، وهو على كل شيء قدير، لا إله إلا الله وحده، أنجز وعده، ونصر عبده، وهزم الأحزاب وحده.

अर्थात: "सर्वशक्तिमान अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं, समस्त प्रकार का शासन तथा प्रशंसा उसी के लिए है और उसके पास प्रत्येक चीज़ की शक्ति है, सर्वशक्तिमान अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है जिसने अपना वचन पूरा किया, अपने भक्तों की सहायता की और अकेले ही बहुत सारी मंडलियों को पराजित कर दिया।" इसी बीच उन्होंने प्रार्थना की और ऐसा उन्होंने तीन बार किया, फिर आप मरवा आए, यहां तक कि जब उनके पैर घाटी के निचले भाग में पहुंचे तो वह दौड़ने लगे तथा जब उनके पैर ऊपरी भाग में पहुंचे तो चलने लगे यहां तक कि आप 'मरवा' पहुंच गए। फिर उन्होंने 'मरवा' में वही सारे कार्य किया जो 'सफ़ा' में किए थे यहां तक कि जब आप अंतिम बार चक्कर लगाते हुए 'मरवा' पर थे तो उन्होंने कहा: "मुझे अपने मामले का ज्ञान यदि पहले हो जाता जो बाद में हुआ तो मैं बलिदान देने के लिए पशु को अपने साथ नहीं लाता एवं अपने इस चक्कर लगाने को उ़मरा बना लेता, इसलिए तुम में से जिस किसी के पास बलिदान देने के लिए पशु ना हो वह अपना एह़राम (ह़ज्ज तथा उ़मरा का वस्त्र) खोल ले और इसे उ़मरा बना ले।" फिर सुराक़ह पिता मालिक पिता जोअ़शम खड़े हुए और कहने लगे: हे अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ! क्या यह हमारे इस वर्ष के लिए है अथवा सदैव के लिए है? तो पैग़म्बर ﷺ ने अपने दोनों हाथ की उंगलियों को एक दूसरे में डालकर दो बार कहा: "ह़ज्ज उ़मरा में सदैव के लिए इसी प्रकार प्रवेश कर गया है।" फिर जब तरवियह का दिन आया तो लोग मिना की ओर प्रस्थान करने लगे एवं ह़ज्ज का तलबियह (लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक...) पुकारने लगे। फिर अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ सवारी पर सवार हुए और 'मिना' जाकर वहीं ज़ुहर, अ़स्र, मग़रिब, इ़शा तथा फ़ज्र की नमाज़ क़स्र (चार रकअ़त वाली नमाज़ों को दो रकअ़त करके अदा करना) के साथ अदा की क्योंकि मक्का वासी लोगों का मामला भी अन्य लोगों समान होता है। फिर आप थोड़ी देर वहां ठहरे यहां तक कि सूर्योदय का समय हो गया, आपने अपने लिए बाल से बने हुए तंबू के संबंध में आदेश दिया और वह नमिरह नामक स्थल पर लगा दिया गया, फिर आप वहां से चले यहां तक कि अ़रफ़ा पहुंच गए। फिर आपको तंबू मिला जो नमिरह में लगाया गया था, आप उसी में ठहरे। यहां तक कि जब सुर्य ढलने का समय हुआ तो आपने अपनी कसवा नामक ऊंटनी के संबंध में आदेश दिया तो उसे तैयार किया गया, फिर वह आपको ले कर चली, फिर आप घाटी के बीच पहुंचे और लोगों को उपदेश देते हुए फ़रमाया: "निःसंदेह तुम्हारे रक्त एवं तुम्हारे धन उसी प्रकार तुम पर ह़राम (पावन तथा सुरक्षित) हैं जिस प्रकार तुम्हारा आज का यह दिन तुम्हारा यह महीना

तथा तुम्हारा यह प्रदेश पावन है। सुनो! जाहिलीयत (पैग़म्बर ﷺ के नबी बनाए जाने से पूर्व के काल) की प्रत्येक चीज़ मेरे पैरों के नीचे है, उस समय में की गई हत्याओं का बदला अब नहीं लिया जाएगा, सर्वप्रथम मैं जिस हत्या के बदले को क्षमा करता हूं वह इब्न-ए-रबीअ़ पिता ह़ारिस की हत्या है, जो सअ़द नामक समुदाय के लोगों में दूध पी रहे थे तो हुज़ैल के लोगों ने उन्हें मार दिया, इसी प्रकार उस समय के ब्याज को भी समाप्त किया जाता है, हमारे ब्याजों में सर्वप्रथम जिस ब्याज को में समाप्त करता हूं वह अ़ब्बास पिता अ़ब्दुल मुत्तलिब का ब्याज है। अब यह सभी बातें पूर्णतः समाप्त कर दी गई हैं। इसी प्रकार तुम लोग अपनी महिलाओं के प्रति सर्वशक्तिमान अल्लाह से डरते रहो क्योंकि तुमने उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह के वचन के साथ अपने पास लिया है तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह के आदेश अनुसार तुमने उनके गुप्तांगों को अपने लिए वैध किया है, इसी प्रकार उनके ऊपर तुम्हारा अधिकार यह है कि तुम्हारे बिस्तर पर ऐसा कोई व्यक्ति ना आए जिसे तुम नहीं चाहते हो, यदि वे ऐसा करती हैं तो उन्हें ऐसी मार मारो जो बहुत अधिक घातक ना हो और उनका अधिकार तुम्हारे ऊपर यह है कि तुम अच्छे ढंग से उनके खाने-पीने तथा पहनने-ओढ़ने आदि आवश्यकताओं की व्यवस्था करो। मैं तुम्हारे बीच ऐसी चीज़ छोड़ रहा हूं जिसे तुमने दृढ़ता के साथ अपनाया तो कभी भी पथ-भ्रष्ट नहीं होगे और वह चीज़ है सर्वशक्तिमान अल्लाह का पवित्र ग्रंथ 'क़ुरआन', यदि तुम लोगों से मेरे प्रति प्रश्न किया जाए तो तुम लोग क्या कहोगे? तो वहां उपस्थित लोगों ने कहा: हम गवाही देंगे कि आपने अपना दायित्व निभाते हुए (सर्वशक्तिमान अल्लाह के संदेश को) हम तक पहुंचा, अमानत अदा की एवं तथा लोगों का भला चाहा। फिर आपने अपनी तर्जनी उंगली को आकाश की ओर उठाया एवं उसे लोगों की ओर झुकते हुए तीन बार कहा: हे अल्लाह! हे अल्लाह!! तू गवाह रहना। फिर अज़ान हुई, फिर इक़ामत हुई तो आपने ज़ुहर की नमाज़ अदा की। फिर इक़ामत हुई तो आपने अ़स्र की नमाज़ अदा की एवं इन दोनों नमाज़ों के बीच आपने कुछ भी नफ़िल नमाज़ अदा नहीं की। फिर अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ सवारी पर सवार होकर 'वुक़ूफ़' के स्थान पर आए एवं अपनी ऊंटनी 'क़सवा' का पेट पत्थरों की ओर कर दिया तथा 'मशात' नामक पहाड़ को अपने सामने किया फिर कअ़बह की ओर मुंह करके वहीं खड़े रहे यहां तक की सूर्यास्त का समय आ गया तथा थोड़ा पीलापन दूर हो गया यहां तक की टिकिया भी अदृश्य हो गई और आपने अपने पीछे ओसामा रज़ियल्लाहुअंहु को बिठाया और चल दिए, आपने अपनी ऊंटनी 'क़सवा' की डोर इस कठोरता से पकड़ी रखी थी कि उसका सिर काठी के किनारे से लग रहा था और आप अपने दाहिने हाथ का उपयोग करते हुए कह रहे थे: लोगो! संयम एवं शांति बनाए रखो। जब आप किसी ऊंचाई से गुज़रते तो ऊंटनी की डोर को हल्की ढीली कर देते ताकि वह सरलता पूर्वक चल सके यहां तक कि 'मुज़दलिफ़ह' नामक स्थल आ गया, फिर आपने वहां एक अज़ान तथा दो इक़ामत के साथ मग़रिब एवं इशा की नमाज़ अदा की और कोई नफ़िल नमाज़ नहीं अदा की। फिर अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ फ़ज्र के समय तक वहीं लेट गए और जब सुबह का समय स्पष्ट दिखने लगा तो आपने एक अज़ान तथा एक इक़ामत के साथ फ़ज्र की नमाज़ अदा की, फिर आप 'क़सवा' ऊंटनी पर सवार होकर मश्अ़र-ए-ह़राम नामक स्थल पर पहुंचे, फिर कअ़बह की ओर मुंह करके अल्लाह से प्रार्थना की, सर्वशक्तिमान अल्लाह की महानता का स्मरण किया, तहलील (ला-इलाह-इल्लल्लाह) कहा तथा उसके एकेश्वरवाद का उल्लेख किया फिर वहीं रुक रहे यहां तक कि बहुत अधिक सफ़ेदी दिखने लगी, फिर सूर्योदय होने से पूर्व ही वहां से चल दिए और आपने फ़ज़्ल पिता अ़ब्बास रज़ियल्लाहुअंहुमा को अपने पीछे बैठाया यहां तक कि आप 'मह़सर' नामक घाटी में पहुंचे और थोड़ी शीघ्रता के साथ चले, फिर आप बीच वाले मार्ग पर चलने लगे जो आपको 'जमरह-ए-कुबरा' के पास पहुंचाती है, यहां तक कि आप एक पेड़ के पास उपस्थित जमरह के पास आ गए, फिर आपने उसे सात कंकरियों से मारा, प्रत्येक कंकरी से मारते हुए आप अल्ला-हू-अकबर कह रहे थे, आपने घाटी के बिचले भाग की ओर कंकरियां मारी, फिर आप पशुओं के बलिदान देने के स्थल पर पहुंचे और वहां आपने अपने हाथ से तिरेसठ ऊंटनियों का बलिदान दिया एवं शेष ऊंटनियों के संबंध में अ़ली रज़ियल्लाहुअंहु को आदेश दिया और उनको अपने बलिदान देने के कार्य में साझीदार बनाया, फिर आपने प्रत्येक बलिदान दिए गए पशु के मांस एक-एक टुकड़ा लेने का आदेश दिया फिर उन सभी को एक देग में डालकर पका दिया गया, आपने और अ़ली रज़ियल्लाहुअंहु ने उनका मांस खाया तथा उसकी तरी को भी पीया, फिर आप ऊंटनी पर सवार हुए और सर्वशक्तिमान अल्लाह के घर

कअ़बह की ओर प्रस्थान कर गए, फिर आपने मक्का में ज़ुहर की नमाज़ अदा की, फिर आप अब्दुल मुत्तलिब के समुदाय के लोगों के पास पहुंचे वे लोग ज़मज़म का पानी पिला रहे थे, आपने फ़रमाया: ऐ अब्दुल मुत्तलिब के समुदाय के लोगो! पानी खींचो, यदि मुझे यह संदेह ना होता कि तुम्हारे जल-भंडारण को लोग हथिया लेंगे तो मैं भी तुम्हारे साथ पानी खींचता, तो उन लोगों ने एक बाल्टी आपको भी दिया, आपने उनमें से जल ग्रहण किया। फिर आप मिना वापस लौटे और वहां तीन दिनों तक ठहरे और प्रत्येक दिन सूरज ढलने के पश्चात जिमार को पत्थर मारते रहे।

अल्लाह के भक्तो! इस प्रकार हमारे सम्मानित पैग़म्बर ने अपना ह़ज्ज संपन्न किया तथा यह कहा: "मुझसे ह़ज्ज से संबंधित नियमों को सीख लो।"

ह़ाजी लोग पवित्र स्थलों पर (समय तथा अवसर) का सदुपयोग सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करने, सुबह़ानल्लाह, अल्ह़म्दुलिल्लाह, ला-इलाहा-इल्लल्लाह कहने, अपने पापों से क्षमा मांगने, पवित्र ग्रंथ क़ुरआन का सस्वरपाठ करने तथा गिड़गिड़ाते हुए सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष प्रार्थना करने में करते हैं, क्योंकि यह महान अवसर केवल कुछ दिनों के लिए ही रहता है जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ وَٱذْكُرُواْ ٱللَّهَ فِيٓ أَيَّامٍ مَّعْدُودَٰتٍۚ ﴾

अर्थात: (गिनती के कुछ दिनों में सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करते रहो।) इसलिए मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आप जिस उद्देश्य से यहां आए हैं उनके अतिरिक्त अन्य कार्यों में अपना समय व्यर्थ ना करें, आप वहां उस सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष खड़ा रहने के लिए गए हैं जो अपनी महानता में अतुल्य है।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़रआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله رب العالمين مستحق الحمد دوماً مستوجب الشكر أبداً، أما بعد!

मेरे प्रिय मुस्लिम भाई! ई़द-उल-अज़ह़ा के दिन चार काम किए जाते हैं:

1- रमि-ए-जमरात करना। (शैतान को पत्थर मारना)

2- पशु की बलि देना।

3- सिर के बाल मुंडवाना।

4- कअ़बह का चक्कर लगाना।

बलिदान के पशु दो प्रकार के होते हैं जिनमें से एक का संबंध ह़ज्ज से है जिसको 'हदि' कहा जाता है तथा दूसरे का संबंध सामान्य बलिदान से है जो ह़ाजी तथा अन्य लोगों की और से दिया जाता है। इसलिए सामान्य बलिदान के कुछ नियम तथा विधि-विधान हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

1- बलिदान के मवेशी का संबंध ऊंट, गाय तथा भेड़-बकरी से होना चाहिए।

2- मवेशी इस्लामी विधान द्वारा निर्धारित आयु की होनी चाहिए, अर्थात: ऊंट पांच वर्ष का होना चाहिए, गाय दो वर्ष का होना चाहिए, भेड़-बकरी एक साल का होना चाहिए तथा दुंबा आदि का बच्चा छः महीने का होना चाहिए।

3- बलिदान की मवेशी लंगड़ा, काना, अंधा, रोगी, दुर्बल, कान कटा तथा छिदे कान वाले जैसे समस्त प्रकार के दोषों एवं रोगों से मुक्त होना चाहिए। पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "ऐसे लंगड़े मवेशी का बलिदान ना दिया जाए जिसका लंगड़ा-पन स्पष्ट दिखाई दे, ऐसे अंधे मवेशी का बलिदान ना दिया जाए जिसका अंधापन स्पष्ट दिखाई दे, ऐसे रोगी मवेशी का बलिदान ना दिया जाए जिसका रोग स्पष्ट हो और ऐसे दुर्बल मवेशी का बलिदान ना दिया जाए जिसकी हड्डी में मांस ना हो।" इसी प्रकार एक वर्णन में है: "पैग़म्बर ﷺ ने ऐसे मवेशी का बलिदान देने से मना किया है जिसका कान इतना कटा हो कि कान का छेद खुल गया हो, जिसकी सींग जड़ से उखड़ गई हो, जिसकी आंख तो सुरक्षित हो परंतु वह नेत्रहीन हो, इतना दुर्बल हो कि वह अन्य बकरियों के साथ चलने में असमर्थ हो और जिसका हाथ-पैर टूट गया हो।"

ऐसे ही अ़ली रज़ियल्लाहुअंहु से एक वर्णन है: "पैग़म्बर ﷺ ने हमें आदेश दिया है कि बलिदान दिए जाने वाले मवेशियों की आंख और कान को ठीक ढंग से देख लें, अर्थात: हम इन दोनों रोगों से सुरक्षित मवेशी की पुष्टि कर दें और काना मवेशी का बलिदान ना दें, ना ही ऐसे मवेशी का जिसका कान अगली तथा पिछली ओर से कटा हो, ना ही ऐसे मवेशी का जिसके कान फटे (गोलाई में) हों, ना ही ऐसे मवेशी का जिसके कान लंबाई में चीरे हुए हों। मेरे प्रिय बलिदानी भाई! इस प्रकार के समस्त दोष बलिदान दिए जाने वाले मवेशी में नहीं होना चाहिए इसलिए आप ऐसे मवेशियों का बलिदान देने से बचें।

4- इस्लामी विधान द्वारा निर्धारित समय में बलिदान दिया जाए जो कि ईद-उल-अज़्हा की नमाज़ अदा करने के पश्चात से लेकर ज़िल्हिज्जा की तेरहवीं तिथि के सूर्यास्त के समय से पहले तक है।

बलिदान देने की एक सुन्नत यह भी है कि बलिदान देने वाला व्यक्ति अपने हाथ से मवेशी को वध करे और उसके मांस में से एक तिहाई भाग स्वयं खाए, एक तिहाई भाग उपहार के रूप में लोगों को दे तथा एक तिहाई भाग दान-पुण्य के रूप में वितरण कर दे और तीन दिनों के भीतर सारे मांस को समाप्त कर दे और इससे अधिक दिनों के लिए कुछ भी बचा कर ना रखे।

रात्रि के समय तथा दिन के समय अपनी सुविधा अनुसार जब चाहे बलिदान के मवेशी को वध किया जा सकता है, परंतु जितना अधिक शीघ्र वध कर दिया जाए उतनी अधिक श्रेष्ठता प्राप्त होगी, मेरे प्रिय भाइयो! आपको ज्ञात होना चाहिए कि बलिदान देना आपके पैग़म्बर मुहम्मद ﷺ की सुन्नत है, अ़ब्दुल्लाह पिता उ़मर रज़ियल्लाहुअंहुमा का कथन है: "अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ ने मदीना में बीस वर्षों तक मवेशियों का बलिदान दिया। पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "बलिदान देने के दिन सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट मनुष्य का सबसे प्रिय कर्म रक्त बहाना है, प्रलय दिवस में बलिदान के मवेशी अपनी सींगों, बालों तथा खुरों के साथ आएंगे, बलिदान का रक्त धरती पर गिरने से पूर्व ही स्वीकार्य का स्थान प्राप्त कर लेता है इसलिए हर्षित हृदय के साथ बलिदान दिया करो।" अतः मेरे भाइयो! ऐसे कार्य से अपने आप को पीछे नहीं रखिए क्योंकि बलिदान देने वाले के लिए प्रत्येक बाल तथा रक्त के प्रत्येक बूंद के बदले सुंदर परिणाम प्राप्त होगा।

अल्लाह के भक्तो! समस्त पैग़म्बरों के सरदार, महान कृपालु, मार्गदर्शक और प्रदान किए गए वरदान स्वरुप पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजिए जैसा कि आप सभी को महान विद्वान एवं महा-ज्ञानी ने अपने कथन के माध्यम से आदेश दिया है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦ ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजते हैं, ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! तुम लोग भी उन पर दरूद भेजो और बहुत अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।)

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! हाजियों के हज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

चतुर्थ उपदेश

अ़रफ़ा के दिन की श्रेष्ठता

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله الذي خلق كل شيء فقدره تقديراً، الحمد لله الذي جعل الإسلام خير شرعة وأفضل منهج للإنسانية، الحمد لله الذي جعل الإسلام خاتم الأديان وأسهل طرق العيش للحياة الدنيوية.

وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له الواحد الأحد الفرد الصمد الذي لم يلد ولم يولد ولم يكن له كفوا أحد، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله وصفيه وخليله وخيرته من خلقه ﷺ وعلى أتباعه الى يوم الدين، أما بعد!

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तो! मैं स्वयं अपने आप को तथा आप सभी को सर्वशक्तिमान अल्लाह से सदैव डरते रहने की सलाह देता हूं, अतः आप सभी लोग छिपे-खुले सभी स्थितियों में उससे डरते रहिए और अपने प्रत्येक कार्य में उसे ध्यान में रखिए परिणाम स्वरुप आप सफ़ल हो जाएंगे, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَقُولُواْ قَوۡلٗا سَدِيدٗا ٧٠ ﴾

अर्थात: (ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! सर्वशक्तिमान अल्लाह से डरते रहो तथा सीधी एवं सच्ची बात करो...)

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तो! इन दस दिनों में सभी सुकर्म तथा पूजा-पाठ संपन्न होते हैं, जिनको ऐय्याम-ए-मअ़लूमात (प्रसिद्ध दिन) कहा जाता है, इन्हीं दिनों में इस्लाम के पांचों रुक्न (स्तंभ) अदा किए जाते हैं, पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "जिस व्यक्ति ने ह़ज्ज किया फिर इस बीच उसने किसी प्रकार की अश्लील बात नहीं की तथा ना ही कोई पाप किया तो वह वहां से (पापों से पवित्र होकर) ऐसे ही लौटा जैसे आज ही उसकी माता ने उसे जन्म दिया हो।" इसलिए जिस व्यक्ति को ह़ज्ज करने यह अवसर प्राप्त हो और उसने पूर्व में ह़ज्ज ना किया हो तो ऐसे व्यक्ति के लिए पवित्र स्थलों में एवं पूजा-पाठ के महान समय में तथा भव्य एवं प्रभावशाली दृश्य के बीच अपने पालनहार से भेंट करने का बहुत ही स्वर्णिम अवसर है। जिस व्यक्ति ने ह़ज्ज अदा कर लिया उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा करते हुए उसका आभार व्यक्त करना चाहिए क्योंकि यह पूरे जीवन में एक बार अदा करना अनिवार्य है और आप लोगों के पैग़म्बर ﷺ ने अपने पूरे जीवन में केवल एक ही बार ह़ज्ज अदा किया।

ह़ज्ज के महीने के द्वितीय सप्ताह में ह़ाजी लोगों का अपने महा पवित्र पालनहार के साथ आध्यात्मिक यात्रा का आरंभ होता हैं तथा वे लोग पवित्र स्थलों में उससे मिलते हैं, कअ़बह के 'ह़तीम' तथा उसके आंगन से लेकर मिना, मुज़्दलिफ़ह तथा अ़रफ़ात की यात्रा करते हैं, यह एक ऐसी आत्मिकता से भरी हुई यात्रा होती है जिसमें वह इन विशेष दोनों में सर्वशक्तिमान अल्लाह से क्षमा-याचना करते हैं, उसकी कृपा की मांग करते हैं, उसे क्षमा चाहते हैं तथा उससे सत्य-मार्ग एवं मार्गदर्शन पर चलने की शक्ति की आशा रखते हैं, साथ-साथ पुकार लग रहे रहे होते हैं:

لبيك اللهم لبيك، لبيك لا شريك لك لبيك، إن الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك.

अर्थात: "हे अल्लाह हम उपस्थित हैं, हम उपस्थित हैं, तेरा कोई साझीदार नहीं, हम उपस्थित हैं, समस्त प्रकार की प्रशंसा, वरदान तथा शासन तेरे ही लिए है, तेरा कोई साझीदार नहीं।"

हज्ज का समय एक ऐसा समय होता है जिससे बहुत सारी सीख प्राप्त होती है, जो मुसलमान की बुद्धि में बैठ जाती है, भले ही उसने हज्ज नहीं अदा किया हो, परंतु वह लाखों लोगों की भीड़ तथा सैकड़ो हज़ारों लोगों के जमघट को एक ही वस्त्र (एहराम) में एक ही पुकार (लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक...) लगाते हुए शासकों के महा-शासक सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर बढ़ते हुए देखता है कि सभी लोग उस अल्लाह से डरते हुए तथा उससे उसकी प्रसन्नता की आशा रखते हुए प्रेम का प्रदर्शन कर रहे हैं। यह एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है जो अपना देश छोड़ने के समय से ही प्रलय की याद दिलाती है, भीड़-भाड़ का यह दृश्य इस प्रकार भी प्रलय की याद दिलाता है कि सभी लोग अपने सांसारिक वस्त्र को त्याग कर थकावट, भूख तथा प्यास की कठिनाई को सहन करते हुए एक पवित्र स्थल से दूसरे पवित्र स्थल की ओर प्रस्थान कर रहे हैं, इन सारी गतिविधियों का उद्देश्य केवल यह है कि आपका पालनहार आपसे प्रसन्न हो जाए। कितना अधिक भाग्यशाली वह व्यक्ति है जिसके हज्ज को स्वीकृति प्राप्त हुई तथा जिसने समस्त पैग़म्बरों के सरदार मुहम्मद ﷺ की विधि अनुसार हज्ज अदा किया जिसका कथन है: "तुम लोग मुझसे हज्ज से संबंधित नियमों को सीख लो।"

मेरे प्रिय भाइयो! इन महा श्रेष्ठ दिनों की उपासनाओं में हज्ज अदा नहीं करने वाले व्यक्तियों के लिए अ़रफ़ा के दिन का उपवास रखना भी है, इसके संबंध में पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "अ़रफ़ा के दिन का उपवास रखने के संबंध में सर्वशक्तिमान अल्लाह से मुझे आशा है कि वह इसके एक वर्ष पूर्व तथा एक वर्ष पश्चात के पापों को क्षमा कर देगा।" यह एक ऐसा महान दिन है जिसमें सर्वशक्तिमान अपने सम्मानित देवदूतों के बीच अपने भक्तों के प्रति गर्व करता है, पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "कोई ऐसा दिन नहीं जिसमें सर्वशक्तिमान अल्लाह अ़रफ़ा के दिन से बढ़कर भक्तों को नर्क से मुक्ति देता हो, वह अपने भक्तों के निकट होता है तथा फ़रिश्तों के सामने इन लोगों के प्रति गर्व करता है और कहता है: यह लोग क्या चाहते हैं?"

एक अन्य हदीस में उल्लिखित है: "शैतान को किसी दिन इतना छोटा, दुत्कारा हुआ, अपमानित तथा क्रोधित नहीं देखा गया जितना वह अ़रफ़ा के दिन होता है, इसका केवल कारण यह है कि उस दिन सर्वशक्तिमान अल्लाह की विशेष कृपा का अवतार होता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने भक्तों के महापापों को क्षमा कर देता है, बद्र के दिन को छोड़कर, पूछा गया: उसने बद्र के दिन क्या देखा था? अपने उत्तर देते हुए कहा: उसने जिब्रील अ़लैहिस्सलाम को देखा था जब वह फ़रिश्तों की पंक्तियों को व्यवस्थित कर रहे थे।।" इसलिए आप लोग इस दिन अधिक से अधिक अल्लाह का स्मरण करें, पवित्र ग्रंथ क़ुरआन का सस्वरपाठ करें, अपने पापों की क्षमा मांगें तथा नमाज़ अदा करें ताकि हमारा महा-पवित्र पालनहार प्रसन्न हो जाए, प्रार्थना करते हुए तथा गिड़गिड़ाते हुए उसकी ओर बढ़ें ताकि आप सफ़ल हो जाएं। एक हदीस में पैग़म्बर ﷺ मुहम्मद का कथन है: "सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना अ़रफ़ा के दिन की प्रार्थना है और सर्वश्रेष्ठ बात जो मैंने और मुझसे पूर्व के पैग़म्बरों ने कही वह कुछ इस प्रकार है:

لا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وحدَه لا شَرِيكَ له، له المُلْكُ وله الحَمدُ، وهو على كُلِّ شيءٍ قديرٌ.

अर्थात: सर्वशक्तिमान अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं, समस्त प्रकार का शासन तथा प्रशंसा उसी के लिए है और प्रत्येक चीज़ पर उसी का नियंत्रण है।"

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तो! इन दस दिनों की पूजा-आराधना में से ईद-उल-अज़्हा की नमाज़ अदा करना एवं उस दिन के उपदेश को ध्यान पूर्वक सुनना भी है, जो एक ऐसा व्यापक उपदेश होता है जिसमें इन दस दिनों में से उस सर्वश्रेष्ठ दिन से संबंधित बातें प्रस्तुत की जाती हैं जिसको नह्र (बलिदान देने) का दिन कहा जाता है। इस दिन के संबंध में पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "क्या तुम लोग जानते हो कि यह कौन सा दिन है? लोगों ने कहा कि इस संबंध में अल्लाह तथा उसके पैग़म्बर ﷺ को सबसे अधिक जानकारी है, फिर आपने फ़रमाया: यह एक पावन दिन है, फिर आपने प्रश्न किया: क्या तुम लोग जानते हो यह कौन सा प्रदेश है? लोगों ने कहा कि इस संबंध में अल्लाह तथा उसके पैग़म्बर ﷺ को सबसे अधिक जानकारी

है, आपने फ़रमाया: यह एक सम्मानित तथा पावन प्रदेश है, फिर अपने प्रश्न किया: क्या तुम लोग जानते हो कि यह कौन सा महीना है? लोगों ने कहा कि इस संबंध में अल्लाह तथा उसके पैग़म्बर ﷺ को सबसे अधिक जानकारी है, फिर आपने फ़रमाया: यह एक पावन महीना है, इस के पश्चात आपने फ़रमाया: तुम लोगों का प्राण, धन-संपत्ति तथा सम्मान एक दूसरे के लिए ह़राम (सुरक्षित तथा पवित्र) कर दिया गया है जिस प्रकार तुम्हारा आज का यह दिन, यह महीना तथा यह प्रदेश सम्मानित तथा पवित्र है।" एक वर्णन कुछ इस प्रकार है: "आज का यह दिन सबसे महान ह़ज्ज का दिन है, हे अल्लाह! तू गवाह रहना और अपने लोगों को विदा कर दिया, फिर सभी लोगों ने कहा: यह 'ह़ज्ज-तुल-विदाअ़' (विदाई ह़ज्ज) है।

इस दिन को सबसे बड़े ह़ज्ज का दिन इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस दिन सर्वाधिक पूजा-पाठ संबंधी कार्य किए जाते हैं, इस दिन तवाफ़-ए-इफ़ाज़ह (मुख्य रूप से कअ़बह का चक्कर लगाना) किया जाता है, सफ़ा तथा मरवा की सअ़यी (दौड़ लगाना) की जाती है, जमरह-ए-अ़क़बह को कंकरी मारी जाती है, ईद-उल-अज़्ह़ा की नमाज़ अदा की जाती है, सिर के बाल मुंडवाए जाते हैं, सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का स्मरण किया जाता है और बलिदान के मवेशियों को वध किया जाता है, इन समस्त कार्यों के प्रति जब पैग़म्बर ﷺ से प्रश्न किया गया: हे पैग़म्बर ﷺ! ह़ज्ज क्या है? तो अपने उत्तर देते हुए फ़रमाया: "तलबियह (लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक) पुकारना और मवेशियों का वध करना।"

मेरे प्रिय भाइयो! इन दस दिनों की इ़बादतों में मवेशियों को वध करना भी है, जिसकी श्रेष्ठता के संबंध में पैग़म्बर मुहम्मद ﷺ का कथन है: "नह़्र (बलिदान देने) के दिन सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट मनुष्य का सबसे प्रिय कार्य रक्त बहना है, प्रलय के दिन बलिदान वाले मवेशी अपनी सींगों, बालों तथा खुरों के साथ आएंगे, बलिदान दिए गए मवेशी का रक्त धरती पर गिरने से पूर्व ही स्वीकृति का स्थान प्राप्त कर लेता है, इसलिए हर्षित हृदय के साथ बलिदान दिया करो।"

गिनती के कुछ दिनों के यह कुछ महान, श्रेष्ठ तथा सुरक्षित रह जाने वाले सुकर्म हैं, सौभाग्यशाली हैं वह व्यक्ति जिसे इन दिनों में अच्छे कार्य कर के अपने महान, सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ पालनहार की प्रसन्नता अर्जित करने की शक्ति प्राप्त हुई और दुर्भाग्यशाली है वह व्यक्ति जो इन दिनों में भी अच्छे कर्मों से पीछे रहकर अपने आप को घाटा उठाने वालों में से बना लिया।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين ولا عدوان إلا على الظالمين، وأشهد أن لا إله إلا الله ولي الصالحين،
وأشهد ان محمداً عبده ورسوله صلوات ربي وسلامه عليه وعلى آله وأتباعه إلى يوم الدين، أما بعد!

अल्लाह के भक्तो! यह सभी दिन सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करने तथा उसके अनगिनत वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करने के दिन हैं, एक ह़दीस में पैग़म्बर मुहम्मद ﷺ का कथन है: "कअ़बह का चक्कर लगाने, सफ़ा तथा मरवा के बीच दौड़ लगाने एवं शैतानों को कंकरी मारने का उद्देश्य केवल सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का स्मरण करना है।"

मुसनद इमाम अह़मद में उल्लिखित है कि एक व्यक्ति ने आकर पैग़म्बर ﷺ मुहम्मद से कहा: हे अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ! कौन सा जिहाद (धर्म युद्ध) सर्वश्रेष्ठ है? पैग़म्बर ﷺ ने उत्तर दिया: जिसमें अल्लाह का स्मरण सबसे अधिक हो, फिर उसने

प्रश्न किया: किन लोगों का उपवास सर्वश्रेष्ठ है? पैग़म्बर ﷺ ने उत्तर दिया: जो लोग सर्वशक्तिमान अल्लाह का सबसे अधिक स्मरण करें, फिर नमाज़ हज्ज और ज़कात के संबंध में प्रश्न किया और आपने हर बार यही उत्तर दिया: जिसमें अल्लाह का स्मरण सबसे अधिक हो, इस पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहुअंहु उ़मर रज़ियल्लाहुअंहु से कहने लगे: अबू-हफ़्स! अल्लाह का स्मरण करने वाले तो प्रत्येक प्रकार की भलाई ले उड़े, पैग़म्बर ﷺ ने फ़रमाया: जी हां।

अल्लाह के भक्तो! समस्त पैग़म्बरों के सरदार, महान कृपालु, मार्गदर्शक और प्रदान किए गए वरदान स्वरुप पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजिए जैसा कि आप सभी को महान विद्वान एवं महा-ज्ञानी ने अपने कथन के माध्यम से आदेश दिया है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦ ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजते हैं, ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! तुम लोग भी उन पर दरूद भेजो और बहुत अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।)

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! ह़ाजियों के ह़ज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार

व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

पंचम उपदेश

(पैग़म्बर ﷺ के) अंतिम उपदेश के निर्देश

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله الكبير المتعال، الحمد لله العزيز القوي شديد المحال، الحمد لله على تمام الأعمال الصالحات مدى الوقت وفي كل الأحوال.

وأشهد أن لا إله إلا الله أمر بالخير، وجعل ما ال أمورنا كلها إلى خير علم من علم وجهل من جهل. وأشهد أن محمداً رسوله الخاتم ونبيه المقدم، بعث على فترة من الرسل ليكون للعالمين رحمة مهداة ونعمة مسداة لمن كان له قلب أو ألقى السمع وهو شهيد. أما بعد!

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरिए, क्योंकि यही व्यापक सलाह तथा बचाव का उपाय एवं ऐसे स्वर्ग तक पहुंचने का माध्यम है जिसकी चौड़ाई आकाश तथा पृथ्वी के समान है, इससे पूर्व कोई सलाह नहीं, इसके पश्चात कोई सलाह नहीं और इसके बीच भी कोई सलाह नहीं, इसलिए अल्लाह से डरते रहिए ताकि आप सफ़ल हो सकें।

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد، الله أكبر كبيراً، والحمد لله كثيراً، وسبحان الله بكرة وأصيلاً.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है, अल्लाह सबसे बड़ा तथा महान है, समस्त प्रकार की अधिक से अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता (महिमा) सुबह एवं शाम अल्लाह ही के लिए है।

आप लोगों के सम्मानित पैग़म्बर ﷺ ने केवल एक ही ह़ज्ज किया जिसको 'ह़ज्जतुल-विदाअ़' कहा जाता है क्योंकि इस ह़ज्ज के (90) दिनों के पश्चात आप अपने अनुयायियों को छोड़कर सबसे महान मित्र (अल्लाह) की ओर प्रस्थान कर गए एवं उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह के संरक्षण में छोड़ दिया। उन्हें कुछ बातों का आदेश दिया, कुछ चीज़ों से रोका और अपने एक महान प्रभावशाली तथा ओजस्वी भाषण में उन्हें मार्गदर्शन दिया, आपने अपने इस भाषण में फ़रमाया: "ऐ लोगो! यह कौन सा दिन है? लोगों ने कहा: यह एक पावन दिन है, फिर आपने कहा: यह कौन सा प्रदेश है? लोगों ने कहा: यह बहुत ही पावन प्रदेश है, फिर आपने कहा यह कौन सा महीना है? लोगों ने कहा यह बहुत ही पवित्र महीना है, फिर आपने फ़रमाया: तुम्हारी धन-संपत्ति, तुम्हारा प्राण तुम्हारा आत्म सम्मान उसी प्रकार एक दूसरे के लिए पवित्र तथा सुरक्षित है जिस प्रकार तुम्हारा यह आज का दिन, तुम्हारा यह शहर तथा तुम्हारा यह महीना पावन तथा पवित्र है। फिर आपने इन बातों को कई बार कहा, इसके पश्चात आपने अपनी तर्जनी उंगली आकाश की ओर उठा कर सर्वशक्तिमान अल्लाह को गवाह बनाते हुए कहा: हे अल्लाह! तू गवाह रहना कि मैंने तेरे संदेश को बार-बार इन लोगों तक पहुंचा दिया।"

एक अन्य वर्णन में आप ﷺ का कथन है: "यह कौन सा दिन है? हम लोगों ने कहा: सर्वशक्तिमान अल्लाह एवं उसके पैग़म्बर ﷺ को इस संबंध में अधिक जानकारी है, फिर आप थोड़ी देर चुप रहे यहां तक कि हमें लगने लगा आप इस दिन का कोई अन्य नाम बताएंगे, फिर आपने फ़रमाया: क्या यह नह़्र का दिन नहीं है? हम लोगों ने कहा क्यों नहीं, फिर आपने

पूछा: यह कौन सा महीना है? हम लोगों ने कहा: सर्वशक्तिमान अल्लाह एवं उसके पैग़म्बर ﷺ को इस संबंध में अधिक जानकारी है, फिर आप थोड़ी देर चुप रहे यहां तक कि हमें लगने लगा आप इस महीने का कोई अन्य नाम बताएंगे, फिर आपने फ़रमाया: क्या यह ज़िल्हिज्जा का महीना नहीं है? हम लोगों ने कहा क्यों नहीं, फिर आपने पूछा: यह कौन सा प्रदेश है? हम लोगों ने कहा: सर्वशक्तिमान अल्लाह एवं उसके पैग़म्बर ﷺ को इस संबंध में अधिक जानकारी है, फिर आप थोड़ी देर चुप रहे यहां तक कि हमें लगने लगा आप इस प्रदेश का कोई अन्य नाम बताएंगे, फिर आपने फ़रमाया: क्या यह प्रदेश मक्का नहीं है? हम लोगों ने कहा क्यों नहीं, फिर आपने फ़रमाया: तुम्हारे प्राण तथा तुम्हारी धन-संपत्ति (वर्णन करने वाले कहते हैं: मुझे लगा कि आपने यह भी फ़रमाया:) और तुम्हारा आत्मसम्मान उसी प्रकार एक दूसरे के लिए सुरक्षित तथा पवित्र है किस प्रकार तुम्हारा यह आज का दिन, तुम्हारा यह महीना और तुम्हारा यह प्रदेश पावन तथा पवित्र है। तुम लोग शीघ्र ही अपने पालनहार से मिलने वाले हो, फिर तुम लोगों से तुम्हारे कर्मों के प्रति प्रश्न किया जाएगा, सावधान! तुम लोग मेरे चले जाने के बाद पथ-भ्रष्ट हो कर एक दूसरे की हत्या ना करने लग जाना, बताओ कि क्या मैंने पूर्णतः संदेश पहुंचा दिया? ध्यान रखना कि तुम में से जो लोग उपस्थित हैं वे लोग अनुपस्थित लोगों तक मेरा यह संदेश पहुंचा दे, संभव है कि जिसे यह (बात) पहुंचाई जाए, वह इसे सुनने वाले कुछ लोगों की तुलना में अधिक (गहराई से) समझने वाला और याद रखने वाला हो।”

इस महान ह़दीस से बहुत से बड़े-बड़े नियमों तथा निर्देशों का पता चलता है जिनको मुसलमान के मामले का निचोड़ (संग्रह) कहा जा सकता है, यदि लोग इन बातों को समझने का प्रयास करते हुए उनका अनुसरण करें, उनमें से कुछ बातें निम्नलिखित है:

1- जीवन (प्राण), धन-संपत्ति एवं मान-सम्मान की सुरक्षा तथा पवित्रता सिद्ध होती है, इसलिए मनुष्य पर स्वयं अपने आपकी रक्षा तथा सुरक्षा करना अनिवार्य है और अन्य व्यक्ति के लिए भी किसी प्रकार का अत्याचार करना एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करना अवैध है।

2- पवित्र प्रदेश मक्का एक पावन प्रदेश है, जिसके प्रति सदैव सम्मान का भाव रखना तथा उसे सम्मान देना अनिवार्य है।

3- ह़ज्ज का महीना भी एक पावन महीना है इसी प्रकार नह़्र (बलिदान देने) का दिन भी एक पवित्र दिन है क्योंकि इसमें पूजा-पाठ संबंधी बहुत सारे कार्य किए जाते हैं।

4- एक मुसलमान अपने पालनहार से अपने कर्मों के साथ मिलेगा और उन सभी अच्छाइयों तथा बुराइयों सहित सर्वशक्तिमान अल्लाह से भेंट करेगा जिनको सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने पास लिख रखा है। अतः उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह को अपने कर्मों का उत्तर देने के लिए पूर्ण रूप से तैयार रहना चाहिए।

5- पैग़म्बर ﷺ का एक महत्वपूर्ण आदेश यह है कि उनका कोई भी अनुयायी बहुदेववाद की ओर वापस पलट कर एक दूसरे की हत्या ना करने लगे, यह इस उपदेश की सबसे महत्वपूर्ण बात है।

परंतु आज स्थिति यह है कि समाज भारी अराजकता से प्रभावित है, मुस्लिम व्यक्ति अपने ही मुसलमान भाई की हत्या कर रहा है, उसकी गरिमा को ठेस पहुंचा रहा है तथा उसकी सीमाओं को लांघ रहा है, उसकी अवैध रूप से हत्या कर देने को वैध समझ रहा है, उसके मान-सम्मान को नष्ट कर रहा है और उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष किसी प्रकार की पकड़ का डर नहीं है। आश्चर्यजनक बात यह है कि इतना सब कुछ दीन (धर्म) नाम पर हो रहा है। हत्या, अपमान, आतंक, तबाही, ख़ून-ख़राबा, संपत्तियों का विनाश तथा महिलाओं एवं बच्चों को बेघर कर देना, ये सारे के सारे काम धर्म के नाम पर किए जा रहे हैं।

यह कौन सा धर्म है, कौन सा संप्रदाय है अथवा कौन सा सिद्धांत है जो एक मुसलमान को इस स्तर तक गिरा देता है कि वह अपने मुस्लिम भाई के मान-सम्मान तथा उसकी गरिमा का थोड़ा भी ध्यान नहीं रखता, जिसकी रक्षा करना ना केवल भाई के नाते अनिवार्य था बल्कि सर्व शक्तिमान अल्लाह का आदेश भी है? ऐसा धर्म जो धर्म के मौलिक सिद्धांतों को भंग कर दे, एक ऐसा संप्रदाय जो सत्य के प्रत्येक मार्ग को नष्ट कर दे और एक ऐसा सिद्धांत जो मानवीय अधिकारों तथा गरिमाओं का हनन करे, ऐसे लोगों पर आश्चर्य होता है जो इस प्रकार के भ्रष्ट विचारों के साथ सर्वशक्तिमान अल्लाह के धर्म की रक्षा करने का दावा करते हुए उसकी आराधना करते हैं।

सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि इस प्रकार के लोगों को ऐसे लोग भी मिल जाते हैं जिन्हें यह अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं फिर वे लोग इनकी बातें आंख मूंद कर मान लेते हैं, अपनी बुद्धि निष्क्रिय कर लेते हैं तथा इनके पीछे अंधाधुंध खींचे चले आते हैं चाहे इसके लिए उन्हें अपने सच्चे धर्म, उज्जवल सिद्धांत और ऐसे मार्ग का बलिदान ही क्यों ना देना पड़े जिनके संबंध में पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "मैं तुम लोगों को ऐसा स्पष्ट धार्मिक सिद्धांत देकर छोड़ रहा हूं जिसक रात और दिन एक समान हैं, मेरे चले जाने के पश्चात जो भी इससे दूरी बनाएगा वह नष्ट हो जाएगा और तुम में से जो व्यक्ति जीवित रहेगा वह शीघ्र ही बहुत से विरोधाभास देखेगा, अतः तुम लोग मेरी जो सुन्नत जानते रहो एवं ऐसे मार्गदर्शन प्राप्त किए हुए शासकों की सुन्नतों को आवश्यक रूप से थामे रहो तथा अपने मार्गदर्शक की आज्ञाकारी को अपने ऊपर अनिवार्य कर लो चाहे वह एक हब्शी दासी ही क्यों ना हो, इन सभी बातों को अच्छे ढंग से समझ लो और याद कर लो, क्योंकि मुसलमान तो आज्ञाकार ऊंट के समान होता है कि उसे जहां ले जाया जाए वह चल पड़ता है।"

अल्लाह के भक्तो! प्रत्येक व्यक्ति जिसने सच्चाई के मार्गदर्शन को छोड़ दिया तो उसने अपने धर्म तथा अपने संसार को एक साथ बेच दिया। इसलिए आप झूठे दावों, घृणित संप्रदायवाद तथा ऐसी गुटबाजी के पीछे चलने से सावधान रहिए जो धर्म को छिन्न-भिन्न कर देती है और उसे टुकड़ों तथा मंडलियों में बांट देती है, महा पवित्र अल्लाह ने सच ही कहा:

﴿ مِنَ ٱلَّذِينَ فَرَّقُواْ دِينَهُمۡ وَكَانُواْ شِيَعٗاۖ كُلُّ حِزۡبِۭ بِمَا لَدَيۡهِمۡ فَرِحُونَ ٣٢ ﴾

अर्थात: (अपने आप को ऐसे लोगों में से मत बना लीजिए जिन्होंने धर्म को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और स्वयं वे लोग भी अलग-अलग मंडलियों में बंट गए, प्रत्येक मंडली के पास जो कुछ है वह उसी में मगन है।) ज्ञात हुआ कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का धर्म एक ही है तथा सत्यता पर आधारित मार्गदर्शन भी एक ही है जो सर्वशक्तिमान तथा महा पवित्र अल्लाह के कथन को सत्यापित भी करता है:

﴿ وَأَنَّ هَٰذَا صِرَٰطِي مُسۡتَقِيمٗا فَٱتَّبِعُوهُۖ وَلَا تَتَّبِعُواْ ٱلسُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمۡ عَن سَبِيلِهِۦۚ ذَٰلِكُمۡ وَصَّىٰكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٥٣ ﴾

अर्थात: (यह धर्म मेरा मार्ग है जो कि सीधा है, अतः इस मार्ग पर चलो और दूसरे अन्य मार्गों पर मत चलो क्योंकि वे सभी मार्ग तुमको अल्लाह के मार्ग से भिन्न कर देंगे, सर्वशक्तिमान अल्लाह तुमको दृढ़ता पूर्वक इसका आदेश देता है ताकि तुम संयम-नियम का पालन करो।)

अह्ल-ए-सुन्नत वल-जमाअ़त का केवल एक ही मार्ग है इसके संबंध में पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "यहूदी लोग (71) मंडलियों में बंट गए, नसरानी लोग (72) मंडलियों में बंट गए और शीघ्र ही इस समुदाय के लोग (73) मंडलियों में बंट जाएंगे। उन में से केवल एक ही मंडली के लोगों को स्वर्ग की प्राप्ति होगी और अन्य (72) मंडलियों के लोग नरक में जाएंगे, प्रश्न किया गया: हे अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ! वे लोग कौन हैं जिन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी? अपने उत्तर दिया: (उस मार्ग पर

चलने वाले लोग) जिस पर मैं हूं एवं मेरे अनुयायी हैं।" इसलिए अल्लाह के भक्तो! अपने आप को इन अच्छे लोगों में से बना लो और ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखो जिनका संबंध तुच्छ तथा बुरे लोगों से है।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين ولا عدوان إلا على الظالمين، وأشهد أن لا إله إلا الله ولي الصالحين، وأشهد ان محمداً عبده ورسوله صلوات ربي وسلامه عليه وعلى آله وأتباعه إلى يوم الدين، أما بعد!

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

मेरे प्रिय भाइयो! आप लोग सदैव पैग़म्बर ﷺ के इस कथन को ध्यान में रखिए: "तुम में से प्रत्येक व्यक्ति एक मुखिया है और प्रत्येक से (उसकी अधीनता में रहने वाले लोगों तथा सामग्रियों के प्रति) प्रश्न होगा, मार्गदर्शक एक मुखिया है, उससे प्रश्न होगा, पुरुष अपनी पत्नी एवं अपनी संतान का मुखिया है और उससे प्रश्न होगा, महिला अपने पति की धन-संपत्ति की रक्षक है और उससे प्रश्न होगा, दासी व्यक्ति अपने मालिक की धन-संपत्ति का चौकीदार है और उससे प्रश्न होगा।" इसलिए आप लोग अपने घरों की रक्षा कीजिए, अपने धार्मिक सिद्धांतों की देख-रेख कीजिए और अपने बच्चों का पालन-पोषण ठीक ढंग से कीजिए एवं सावधान रहिए कि कहीं आपके बच्चों के पांव भटकाव की गलियों तथा असत्य के मार्गों पर डगमगा ना जाएं।

अल्लाह के भक्तो! समस्त पैग़म्बरों के सरदार, महान कृपालु, मार्गदर्शक और प्रदान किए गए वरदान स्वरुप पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजिए जैसा कि आप सभी को महान विद्वान एवं महा-ज्ञानी ने अपने कथन के माध्यम से आदेश दिया है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦ ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजते हैं, ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! तुम लोग भी उन पर दरूद भेजो और बहुत अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।)

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! ह़ाजियों के ह़ज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

षष्ठ उपदेश

ह़ज्ज के पश्चात क्या करें?

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله الذي بنعمته تتم الصالحات، وبفضله تتوالى الخيرات والطيبات والأمنيات، وبتوفيقه يبلغ الإنسان مواطن الرحمات والنفحات، وبكرمه نصل إلى دار النعيم ومستقر الكرامات.

الحمد لله الذي خلقنا من العدم، ومن علينا برحمته الخيرات والنعم، وجنبنا الفتن والنقم، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، نحمده سبحانه ونشكره ونثني عليه ولا نكفره، واشهد ان محمداً رسول الله، هو خير مخلوق وأكرم محمود ﷺ وعلى آله وأصحابه وأتباعه إلى يوم القيام والأهوال العظام. أما بعد!

الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

मेरे मुस्लिम भाइयो! कुछ दिनों पहले हम लोग सर्वशक्तिमान अल्लाह द्वारा अनिवार्य की गई पूजा-आराधना को संपन्न करने तथा इस्लाम के पांचवें स्तंभ को पूरा करने के लिए ह़ज्ज के मौसम का स्वागत करने की तैयारी कर रहे थे और देखिए कि अब हम इसके अंतिम दिनों को विदा कर रहे हैं, बस अब कुछ ही घंटे शेष रह गए हैं, इस पूजा-आराधना (ह़ज्ज) से संबंधित अंतिम कार्यक्रम पूरे हो जाएंगे तथा इसका समय समाप्त हो जाएगा। मेरे प्रिय मुस्लिम भाई! प्रश्न यह है कि अब हम इस ह़ज्ज के पश्चात क्या करें? अल्लाह के भक्तो! आपको पता होना चाहिए कि पुण्य कार्यों में और विशेष कर ह़ज्ज के दौरान लोग चार श्रेणियों में बंटे होते हैं:

1- वह व्यक्ति जिसने पूरे लगन और संघर्ष के साथ कार्य किया, अपना कमर कस लिया, अपनी शक्ति लगाई, प्रत्येक पल का सदुपयोग किया तथा प्रत्येक अवसर से लाभ उठाया और उनमें से कुछ भी व्यर्थ नहीं होने दिया, सुकर्म करने में कटौती नहीं की और ना ही पूजा-आराधना से संबंधित किसी भी कार्य को पूर्णतः निभाने के प्रति लापरवाही नहीं किया, इन सभी बातों के साथ-साथ वह एक दृष्टि से सर्वशक्तिमान अल्लाह से भयभीत भी था तो दूसरी ओर उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह से आशा भी थी कि उसकी तपस्याएं तथा पूजा-आराधना से संबंधित कार्य स्वीकार्य हुए या नहीं। अतः आप देखेंगे कि वह व्यक्ति अपने सम्पूर्ण प्रयास करने, संघर्ष करने तथा ध्यान लगाने के पश्चात वह सर्वशक्तिमान अल्लाह से प्रार्थना करता है कि उसने जो भी कार्य किए वे स्वीकार्य हो जाएं, उसकी तपस्याएं सराहनीय हों, उसके पाप मिटा दिए जाएं तथा उसके ह़ज्ज को स्वीकृति प्राप्त हो जाए।

2- वह व्यक्ति जो पूजा-आराधना से संबंधित कार्य के प्रति प्रयास करने, संघर्ष करने और ध्यान लगाने में पहले ही व्यक्ति के समान होता है, परंतु वह अपने कार्य को करने के पश्चात वह इस बात के लिए प्रार्थना नहीं करता है कि उसके सुकर्म स्वीकार्य हो जाएं, उसके पाप क्षमा कर दिए जाएं, उसका संघर्ष सराहनीय हो तथा उसके ह़ज्ज को स्वीकृति प्राप्त हो जाए बल्कि वह पूर्ण रूप से अपने किए गए कार्य पर ही निर्भर हो जाता है। इस प्रकार वह व्यक्ति सभी कार्य संपन्न तो कर लेता है परंतु अपने काम को संपन्न करने के पश्चात उन तपस्याओं की स्वीकृति के लिए सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष प्रार्थना करने में कमी कर बैठता है (जो कि किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है) अतः एक व्यक्ति पर अनिवार्य है कि वह केवल अपनी

पूजा-आराधना से संबंधित कार्य पर ही निर्भर नहीं हो बल्कि वह अपनी उसकी स्वीकृति के लिए सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाते हुए प्रार्थना करे ताकि वह उसके कार्य को स्वीकार कर ले तथा उसमें जो भी कमी रह गई हो उसकी भरपाई कर दे। कौन ऐसा व्यक्ति है जिसे यह पता है कि उसके सुकर्म स्वीकार्य हो गए हैं?

3- एक ऐसा व्यक्ति जिसने ह़ज्ज से संबंधित कार्य के प्रति अपने दायित्व को पूरा करने में कमी की और जिस प्रकार कार्य करना चाहिए था उसमें उसने लापरवाही की तथा पीछे हटा एवं उसने अपनी कमर नहीं कसी बल्कि वह ढीला पड़ गया तथा आलस्य से काम लिया, यह भी संभावना है कि उसने पूजा-आराधना से संबंधित अनिवार्य कार्यों के स्तंभों को पूरा नहीं किया और अपने कर्तव्यों के निभाने के अवसर को खो दिया। इसके साथ-साथ उसने इस बात की भी परवाह नहीं की कि उसने जो कुछ किया है वह ठीक ढंग से सम्पन्न हुआ या फिर जैसे-तैसे करके उसने पूरा कर लिया। इस लापरवाही का कारण आलस्य, अज्ञानता, कमी तथा कोताही हो सकती है और इन दोनों स्थितियों का परिणाम एक ही होता है। फिर आप देखेंगे कि यह व्यक्ति अपने कर्तव्यों को पूरा करने के पश्चात इस बात का प्रयास करता है कि उसने जो कुछ लापरवाही की है सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाते हुए प्रार्थना करके उसकी भरपाई कर ले ताकि वह उसकी पूजा-आराधना से संबंधित कार्यों को स्वीकार कर ले इसके साथ-साथ वह हर ऐसा काम करने का प्रयास करता है जिससे उसके द्वारा किए गए कार्यों में पाई जाने वाली कमियों की भरपाई हो जाए, जैसे: वह दान-पुण्य करता है, उपवास रखता है एवं पशुओं का बलिदान देता है। अब यह बात सर्वशक्तिमान अल्लाह की कृपा पर निर्भर है कि वह उसकी लापरवाहियों को क्षमा कर दे और उसके कर्मों को ठुकराए बिना उसे स्वीकार कर ले।

4- एक ऐसा व्यक्ति जिसने ह़ज्ज से संबंधित कार्यों को पूरा करने में कमी की, लापरवाही तथा आलस्य से काम लिया एवं जिस प्रकार उन पर कर्तव्यों को निभाना अनिवार्य था उन्हें पूरा करने से पीछे हटा और मनचाहे ढंग से उसने कर्म किए, उसने अपने दायित्वों के प्रति किसी प्रकार की परवाह नहीं की तथा ना ही किसी प्रकार का प्रयास किया, इसके साथ-साथ उसने इस बात की भी चिंता नहीं की कि उसके कर्म स्वीकार हुए अथवा ठुकरा दिए गए एवं अपने कर्म को स्वीकार करवाने के लिए सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष ना गिड़गिड़ाया और ना ही प्रार्थना की, इन समस्त बातों की प्रति उसने किसी प्रकार की चिंता नहीं की, बल्कि उसने कमी-कोताही और लापरवाही के साथ उसने जो कुछ किया उसी पर निर्भर हो गया जबकि सामान्यतः ऐसी स्थिति में कोई भी कर्म स्वीकार्य नहीं होता है। हो सकता है कि इस प्रकार के लोगों की केवल यह इच्छा हो कि उन्हें ह़ाजी-ह़ाजी कहकर संबोधित किया जाए।

अतः मेरे मुस्लिम भाई! मैंने यह सारी बातें आपसे ह़ज्ज के समय के समाप्त हो जाने के पश्चात कही है ताकि आप अपने मन में विचार करें कि आपका संबंध किस प्रकार के लोगों से है।

क्या आप ऐसे लोगों की श्रेणी में आते हैं जिन्होंने कर्तव्यों को निभाया तथा अपने कर्मों के प्रति चिंता करते हुए सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाया और प्रार्थना की अथवा ऐसे लोगों से है जिन्होंने केवल अपने कर्तव्यों को पूरा किया और इसी पर बस कर दिया, अथवा ऐसे लोगों से है जिन्होंने कमी-कोताही के साथ अपने कर्म किए परंतु उन लापरवाहियों को ध्यान में लाकर अपने कर्मों को स्वीकार करवाने के लिए सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाते हुए प्रार्थना की अथवा ऐसे लोगों से है जिन्होंने कमी-कोताही और लापरवाही के साथ कर्म किए और यह मान लिया कि उसने जो कुछ कर्म किए हैं वो प्रत्येक रूप से संपन्न तथा पूर्ण हैं।

मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! इन पवित्र स्थलों को छोड़ने से पूर्व अपने आप की जांच-पड़ताल कर लीजिए। आपको पता होना चाहिए कि सलफ़-ए-सालिह़ीन (अतीत काल के अच्छे लोग) कर्म करने से अधिक कर्मों की स्वीकृति के लिए सर्वशक्तिमान

अल्लाह से प्रार्थना करते थे और यह कहते थे कि हमें इस बात का डर है कि हमारे कर्मों को स्वीकृति प्राप्त ना हो एवं हम इस बात से भी भयभीत हैं कि हमारे कर्मों को ठुकरा दिया जाए, हम सर्वशक्तिमान अल्लाह की शरण चाहते हैं।

मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आपको इस बात से अवगत रहना चाहिए कि कर्मों की स्वीकृति की पहचान यह है कि आप सुकर्म के पश्चात सुकर्म करें और ठुकराए हुए कर्मों की पहचान यह है कि आप अच्छे कर्मों से पीछे हट जाएं तथा सुकर्म करने के पश्चात कुकर्म करने लगें, इसलिए जब सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आपके पापों को क्षमा कर दिया है और आप यहां से ऐसे पवित्र होकर लौट रहे हैं जैसे आपकी माता ने आपको आज ही जन्म दिया हो तो इसके पश्चात दोबारा कुकर्म करने की ओर ना जाएं और ना ही किसी प्रकार की अवज्ञा में ग्रस्त हों।

सर्वप्रथम आप सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा इसलिए करें कि उसने इस पवित्र प्रदेश में आने के लिए आपको आसानी प्रदान की और ऐसे लाखों लोगों में आपका चयन किया जो यहां पहुंचने में सक्षम नहीं हैं।

फिर आप सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा इसलिए कीजिए कि उसने ह़ज्ज से संबंधित पूजा-आराधनाओं को संपन्न करने और इसस संबंधित कार्यों को करने की शक्ति प्रदान की तथा ऐसा करना आपके लिए सरल बना दिया एवं आपसे कठिनाइयों और थकावटों को दूर कर दिया।

फिर आप सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा इसलिए कीजिए कि उसने आपके लिए ह़ज्ज से संबंधित समस्त कार्यों को संपन्न करने की शक्ति दी, ह़ज्ज से संबंधित कार्यों के बीच में आपकी मृत्यु नहीं हुई, आपको किसी रोग ने प्रभावित नहीं किया अथवा आप किसी ऐसी कठिनाई में नहीं पड़े जो पूजा-आराधना करने में बाधित होती।

फिर आप सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा इसलिए कीजिए कि उसने आपको अपने समक्ष गिड़गिड़ाने तथा अपने कर्मों की स्वीकृति के लिए प्रार्थना करने का अवसर प्रदान किया ताकि आपका कर्म स्वीकार्य हो, आपका संघर्ष सराहनीय हो, आपके पाप क्षमा कर दिए जाएं तथा आपके ह़ज्ज को स्वीकृति प्राप्त हो, उसने आपको असफ़ल होकर लौटने से सुरक्षित कर लिया।

फिर आप सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा इसलिए कीजिए कि उसने आपको उपरोक्त सारे कार्य करने की शक्ति दी, आपके ह़ज्ज को आपके पापों के क्षमा करने का कारण बनाया यहां तक कि आप अपने पापों से पवित्र होकर ऐसे शिशु के समान वापस आए जिसको उसकी मां ने आज ही जन्म दिया हो, इसके साथ-साथ उसने आपको निरंतर भलाई तथा आज्ञाकारी पर आधारित कार्य करने की शक्ति दी तथा बुराइयों एवं कुकर्मों से आपको वंचित रखा। इसलिए आप सर्वशक्तिमान अल्लाह से निकट करने वाले अच्छे कर्मों को करने में शीघ्रता से काम लीजिए और अच्छाइयों को बर्बाद कर देने वाले कामों तथा बुराइयों से बचते रहिए।

फिर आप सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा इसलिए कीजिए कि उसने आपको आपके प्रदेश तथा आपके घर आपकी पत्नी एवं बच्चों के बीच वापस लौटाया, उसकी प्रशंसा इसलिए कीजिए कि उसने आपको सौभाग्य के साथ, (भलाईयों का) एक बड़ा भाग देकर सफ़लतापूर्वक सुरक्षित वापस लौटने का अवसर दिया, आपने ह़ज्ज से संबंधित कर्तव्यों को पूरा किया, पूजा-आराधना से संबंधित सभी नियमों का पालन किया एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आपको आपके परिवारों और नातेदारों के पास सकुशल वापस पहुंचा दिया।

मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! आप इन सभी बातों पर सर्वशक्तिमान अल्लाह की प्रशंसा कीजिए क्योंकि ये सभी काम ऐसे व्यक्ति के लिए बड़े ही महान हैं जो अपने ऊपर सर्वशक्तिमान अल्लाह द्वारा प्रदान किए गए उपकारों को पहचानता है और इसके कारण उसका आभार व्यक्त करता है। समस्त प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, समस्त प्रकार की प्रशंसा अल्लाह

ही के लिए है, सदैव-सदैव समस्त प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है वैसे ही जो उसकी महान सत्ता तथा उसकी गरिमा एवं उसके महान अधिकार के योग्य हो, वह समस्त प्रकार की त्रुटियों से पवित्र है।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله رب العالمين دائماً وأبداً، نحمده سبحانه ونشكره ونستغفره ونستعينه ونستهديه ونؤمن به ونتوكل عليه، والصلاة والسلام على سيد الغر المحجلين وإمام المتقين سيدنا ونبينا محمد ﷺ وعلى آله وأتباعه إلى يوم الدين، أما بعد!

मेरे प्रिय ह़ाजी भाई! ह़ज्ज भलाई के उन अवसरों में से एक है जो मानवीय जीवन में (अधिकतर) एक ही बार आता है तथा इस बात की संभावना होती है कि उसे दोबारा यह अवसर प्राप्त ना हो, इसलिए जिस व्यक्ति को ह़ज्ज करने का अवसर मिले उसे यह जान लेना चाहिए कि वह इसे संपन्न करने के पश्चात ऐसे ही लौटा जैसे वह उस दिन था जिस दिन उसका जन्म हुआ था। अतः उसे पापों, बुराइयों तथा अवज्ञाओं की ओर नहीं लौटना चाहिए और ना ही कुकर्म, भ्रष्ट तथा घृणित कृत्य करना चाहिए। यदि वह ऐसा करता है तो फिर वह सर्वशक्तिमान अल्लाह द्वारा पापों की क्षमा किए जाने के पश्चात शैतानों तथा बुराइयों के पथ पर लौट जाएगा फिर उसकी स्थिति ऐसे व्यक्ति के समान हो जाएगी जिसने संघर्ष के साथ कोई कार्य किया फिर उसे अपने ही दोनों हाथों से तोड़कर नष्ट कर दिया, ऐसे व्यक्ति के लिए कितनी बड़ी हानि तथा घाटा है और उसने कितना अधिक घृणास्पद कृत्य किया। कौन जानता है कि उसके ह़ज्ज की अस्वीकृति का यही कारण तथा पहचान हो! समस्त प्रकार की शक्ति अल्लाह ही के पास है जो उच्चतम तथा महान है।

अल्लाह के भक्तो! समस्त पैग़म्बरों के सरदार, महान कृपालु, मार्गदर्शक और प्रदान किए गए वरदान स्वरुप पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजिए जैसा कि आप सभी को महान विद्वान एवं महा-ज्ञानी ने अपने कथन के माध्यम से आदेश दिया है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا٥٦ ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजते हैं, ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! तुम लोग भी उन पर दरूद भेजो और बहुत अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।)

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! हाजियों के ह़ज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

सप्तम उपदेश

हिजरी वर्ष का समापन

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله مصرف الليالي والأيام، ورازق العباد على الدوام. الحمد لله الذي جعل الدنيا دار ممر، وجعل على الآخر دار مستقر ومقر. الحمد لله الذي مايز بين العباد في الدنيا بالرضا، ورفع بعضهم فوق بعض بدرجات التقوى. الحمد لله الذي جعل الآخرة خيراً من الأولى، واختص لكل دار رجال لها يعملون. الحمد لله الذي هدانا للإسلام وجعلنا من أمة خير الأنام.

وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له بيده مقاليد الأمور، وبامره تصريف الخلق على مر العصور. وأشهد أن محمداً عبد الله ورسوله وصفيه وخليله وخيرته من خلقه القائل: "إِنَّ اللَّهَ نَظَرَ إِلى أَهلِ الأَرضِ فَمَقَتَهُم عَرَبَهُم وعَجَمَهُم إلّا بَقايا مِن بَنِي إسرائِيل. وفي رواية مِن أَهلِ الكِتابِ." وكان الدين قد التبس على أهل الأرض كلهم حتى بعث الله محمداً ﷺ فهدى الخلائق وأخرجهم الله به من الظلمات الى النور وتركهم على المحجة البيضاء والشريعة الغراء.

صلى الله عليه وسلم وبارك وزاد وأنعم وتفضل وعلى الصحب والأتباع ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين، أما بعد!

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से डरिए, क्योंकि यही व्यापक सलाह तथा बचाव का उपाय एवं ऐसे स्वर्ग तक पहुंचने का माध्यम है जिसकी चौड़ाई आकाश तथा पृथ्वी के समान है, इससे पूर्व कोई सलाह नहीं, इसके पश्चात कोई सलाह नहीं और इसके बीच भी कोई सलाह नहीं, इसलिए अल्लाह से डरते रहिए ताकि आप सफ़ल हो सकें।

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد، الله أكبر كبيراً، والحمد لله كثيراً، وسبحان الله بكرة وأصيلاً.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है, अल्लाह सबसे बड़ा तथा महान है, समस्त प्रकार की अधिक से अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता (महिमा) सुबह एवं शाम अल्लाह ही के लिए है।

ह़ज्ज का अवसर मिलना तथा इसमें विभिन्न पूजा-पाठ करना सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से एक उपकार के समान है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति इस्लाम के स्तंभों को पूरा करता है और सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से महान सवाब (पुरस्कार) प्राप्त करता है। जो व्यक्तिगण इन दिनों में ह़ज्ज करने में सक्षम नहीं होते हैं उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह नौ दिनों विशेष कर अ़रफ़ा के दिन का उपवास रखने की शक्ति देता है इसी प्रकार सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण तथा अन्य आराधना करने एवं पशुओं का बलिदान देने की क्षमता देता है। यह सभी काम तथा कर्म महान हैं, सर्वशक्तिमान अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के साधन हैं, जिनको संपन्न करने के कारण सर्वशक्तिमान अल्लाह एक व्यक्ति को बहुत ही उच्च स्थान तथा गौरवशाली पद प्रदान करता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह स्वयं सर्वोच्च सम्मान तथा उच्चतम स्थान वाला है।

इस संबंध में महत्वपूर्ण बात यह है कि ह़ज्ज के अवसर के चले जाने की पश्चात लोग दो प्रकार के गुटों में बंट जाते हैं, जिनमें से एक गुट सर्वशक्तिमान अल्लाह के (सच्चे भक्तों का) होता है तो दूसरा गुट शैतान के (अनुयायियों का) होता है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह के भक्तों के गुट में वे लोग होते हैं जिनसे महा पवित्र अल्लाह प्रेम करता है और अपनी कृपा, अपनी क्षमा एवं अपनी प्रसन्नता की सीमा में प्रवेश करा देता है, फिर उन्हें भलाई, अच्छाई एवं सत्यता पर आधारित कर्म करने में लगा देता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह जिस व्यक्ति से प्रसन्न हो जाता है उसके समस्त कार्य तथा कर्म को भलाई की ओर मोड़ देता है तथा उसके सभी बड़े मामलों का अंत भलाई पर ही करता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह उसे संतुष्ट कर देता है, उसके प्रत्येक मामले में बरकत (भलाई पर आधारित वृद्धि) डाल देता है, उसकी स्थिति को सुधार देता है और उसका संरक्षण करता है, उसकी रक्षा करता है एवं उससे कठिनाइयों, बुराइयों तथा नकारात्मक परीक्षाओं तथा दुर्भाग्य के प्रकोप से उसे सुरक्षित कर लेता है। उस पर अपनी विशेष कृपा करता है तथा उसके लिए समस्त प्रकार की भलाईयों और खुशियों को एकत्रित कर देता है और उसके मामलों के परिणाम को सुखद बना देता है।

जहां तक शैतान के अनुयायियों के गुट का मामला है तो इसमें ऐसे लोग होते हैं जिनसे सर्वशक्तिमान अल्लाह क्रोधित होता है, ऐसे लोगों को नकारात्मक कार्यों, बुराइयों तथा असत्यता पर आधारित काम पर लगा देता है, संसार के सारे दुखों, नकारात्मक परीक्षाओं तथा इसकी सुंदरताओं को ऐसे लोगों पर थोप देता है, फिर ऐसे लोग संसार की थोड़ी सी चीज़ से संतुष्ट नहीं होते हैं, सर्वशक्तिमान अल्लाह ऐसे लोगों की बरकत (भलाईयों में वृद्धि) के द्वार को बंद कर देता है और इसके बदले इन लोगों पर ऐसी चीज़ थोप देता है जिसके कारण इनके जीवन से बरकत समाप्त हो जाती है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ऐसे लोगों की सामूहिक शक्ति को बिखेर देता है, इन लोगों के बीच फूट डाल देता है और इसकी स्थिति को बिगाड़ देता है, यह दुनिया ऐसे लोगों को व्यस्त करके अपने सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ पालनहार की पूजा-आराधना करने से दूर कर देती है, अल्लाह ऐसे लोगों पर दुर्भाग्य के प्रकोप को थोप देता है और उसे कठिनाइयों, बुराइयों एवं नकारात्मक परीक्षाओं में ग्रस्त कर देता है। एक व्यक्ति के साथ ये सब सर्वशक्तिमान अल्लाह से दूरी बनाए रखने के कारण होते हैं।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि प्रत्येक मुस्लिम व्यक्ति उपरोक्त दोनों गुटों में से किसी एक से संबंध रखता है, या तो वह अल्लाह के समूह, उसके सहायक तथा उसके सैनिक से संबंध रखता है अथवा शैतान के समूह, उसके सहायक तथा उसके सैनिक से संबंध रखता है।

अतः अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह के समूह से जुड़ जाइए जिससे संबंधित लोग भयभीत भी नहीं होंगे तथा उदास भी नहीं होंगे, महा पवित्र अल्लाह के विधि-विधान का विशेष कर ह़ज्ज के अवसर के चले जाने के पश्चात आवश्यक रूप से पालन कीजिए, सर्वोच्च तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह की आज्ञा का पालन कीजिए, उसकी निषिद्धताओं से बचते रहिए, उसके साथ किसी को साझी मत बनाइए, सर्वशक्तिमान अल्लाह के धर्म में नवीनता को उत्पन्न मत कीजिए, उसके मार्गदर्शन में परिवर्तन नहीं कीजिए, पाखंड, झूठ, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, परनिंदा, परोक्ष निंदा, मिथ्यापवाद, द्वेष, जासूसी, अन्य महिलाओं को देखने तथा उन्हें सुनने, वर्जित मार्गों पर चलने, लोगों के भेद खोलने, उन्हें लज्जित करने, उन्हें घृणित समझने से अपने आप को बचाते रहिए भले ही वह आपसे निचले स्तर के हों, इसी प्रकार किसी का उपहास मत कीजिए, इस्लामी विधि-विधान द्वारा वर्जित की गई चीज़ों को एवं अवज्ञा तथा कुकर्म को हीन भावना से मत देखिए, बुराई तथा पाप पर आधारित कृत्य मत कीजिए, संसार के प्रलोभन के पीछे मत खिंचे चले आइए, अपने इस सांसारिक जीवन में अपने आप को इस प्रकार व्यस्त मत कर लीजिए कि आप परलोक को ही भूला दीजिए और शैतान के झांसे में आकर आप अपने धार्मिक मामलों (तथा उसके सिद्धांतों) का उल्लंघन मत कीजिए।

मेरे भाइयो! उपरोक्त समस्त बातें तथा इससे संबंधित और भी अधिक नकारात्मक गतिविधियां लोगों की सांसारिक एवं पारलौकिक जीवन को नष्ट कर देने वाली हैं। सांसारिक जीवन में भले ही यह समस्त गतिविधियां तथा बातें वासना से संबंधित हैं एवं लोगों को आनंद देती हैं परंतु परलोक दिवस में ये समस्त गतिविधियां पछतावा तथा लज्जा का कारण बनकर प्रकट होंगी, जिनका परिणाम नरक की आग में गहरे गड्ढे एवं निचली परतों के रूप में मिलेगा। अतः मेरे प्रिय भाइयो! आप ऐसे लोगों से सावधान रहिए जिनको इस सांसारिक जीवन ने पराजित कर दिया जिसके कारण उनकी पारलौकिक जीवन नष्ट हो गई।

मेरे प्रिय मुस्लिम भाई! ह़ज्ज के अवसर के चले जाने के पश्चात आप अनिवार्य रूप से सत्य मार्ग पर ठीक ढंग से चलते रहिए ताकि एक अच्छाई के बाद दूसरी अच्छाई लगातार होती रहे और ऐसे व्यक्ति के सामान मत हो जाइए जो पहले-पहले तो अच्छे कर्म करता है परंतु कुछ समय के बीत जाने के पश्चात वह बुराई करने लगता है और पैग़म्बर ﷺ के इस कथन को ध्यान में रखिए: "जिस व्यक्ति ने ह़ज्ज किया और इस बीच उसने किसी प्रकार की बुरी बात नहीं की और ना ही किसी प्रकार का पाप किया तो वह ऐसे लौटता है जैसे वह उस दिन था जिस दिन उसकी माता ने उसे जन्म दिया था।" कितना ही सौभाग्यशाली है वह व्यक्ति जिसे ह़ज्ज करने का अवसर मिला, इसी प्रकार कितना ही सौभाग्यशाली हैं वह व्यक्ति जिसने ह़ज्ज तो नहीं किया परंतु वह ऐसे लोगों में से है जिन पर सर्वशक्तिमान अल्लाह ने विशेष कृपा करते हुए उपवास रखने, स्मरण करने एवं पशुओं का बलिदान देने की शक्ति प्रदान की। इसलिए निरंतर सत्य मार्ग पर चलते रहिए इसी प्रकार निरंतरता के साथ भलाई पर आधारित कर्म करते रहिए और ऐसे व्यक्ति के समान बन जाइए जो घने छायादार वृक्ष से दूसरे की ओर, एक बाग़ से दूसरे की ओर तथा एक महकते बग़ीचे से दूसरे की ओर बढ़ता है और ऐसे व्यक्ति के पदचिह्न पर मत चलिए जो घने छायादार वृक्ष से गड्ढे में जा गिरे, लहलहाते बाग़ को छोड़कर ढह जाने वाली कगार (खोखली दीवार) की ओर चल पड़े एवं महकते बग़ीचे को छोड़कर गहरी तथा डरावनी खाई में जा गिरे।

मेरे मुस्लिम भाइयो! इस बात में कोई संदेह नहीं है कि ह़ज्ज एक महान धार्मिक अनुष्ठान, ईमानी (विश्वसनीय) यात्रा तथा एक ऐसा अवसर है जिससे प्राप्त होने वाली सीख एवं सलाह पर आधारित बातें एक मुस्लिम व्यक्ति की बुद्धि तथा स्मृति में सदैव के लिए में बैठ जाती हैं, यहां तक कि जो व्यक्ति ह़ज्ज यात्रा पर नहीं गया वह सैकड़ों, हज़ारों तथा लाखों लोगों को देखता है कि सभी लोग एक साथ, एक ही मार्गदर्शन पर चल रहे हैं, ध्यान रहे कि यह चीज़ ह़ाजियों को उनके एक रचयिता, एक धर्म, एक मार्गदर्शन, एक पालनहार तथा एक ग्रंथ से जोड़ती है, इनमें से प्रत्येक व्यक्ति सर्वशक्तिमान अल्लाह की दृष्टि में एक समान हैं, अतः जो व्यक्ति अच्छा करे इसका लाभ स्वयं उसे ही प्राप्त होगा तथा जो व्यक्ति बुराई करे तो उसे अपने दोष का बोझ स्वयं उसे ही उठाना पड़ेगा, जैसा कि महा पवित्र तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह का उसके महान ग्रंथ में कथन है:

﴿مَّنۡ عَمِلَ صَٰلِحٗا فَلِنَفۡسِهِۦۖ وَمَنۡ أَسَآءَ فَعَلَيۡهَاۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّٰمٖ لِّلۡعَبِيدِ ٤٦﴾

अर्थात: (जो व्यक्ति अच्छे कर्म करेगा वह अपने लाभ के लिए करेगा एवं जो व्यक्ति बुरे कर्म करेगा तो उसका बोझ इस पर है और आपका पालनहार अपने भक्तों के साथ रत्ती भर भी अन्याय करने वाला नहीं है।)

अल्लाह के भक्तो! -सर्वशक्तिमान अल्लाह आपकी रक्षा करे- आप इस बात से अवगत रहें कि आपको अपने अच्छे कर्मों का परिणाम दो बार प्राप्त होगा, एक बार इस सांसारिक जीवन में संतुष्टि और सफ़लता के रूप में जो एक मोमिन (विश्वासी) व्यक्ति के लिए शीघ्र मिलने वाली शुभ सूचना है और फिर परलोक में स्वर्ग एवं ऐसे सुख के रूप में जो सदैव रहने वाला है।

अल्लाह की भक्तो! आपको पता होना चाहिए कि कभी-कभी सांसारिक सुख आपको प्राप्त ना हो तो इससे कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि (सर्वशक्तिमान अल्लाह के यहां) इसका सर्वश्रेष्ठ बदल तथा संतुष्ट कर देने वाली सुख-शांति है

और प्रत्येक स्थिति में यह सांसारिक सुख-सुविधाएं सुरक्षित रहने वाली नहीं हैं बल्कि बहुत थोड़ी सुविधा है जो शीघ्र ही समाप्त भी हो जाएगी। महत्वपूर्ण बात यह है कि जो सबसे बड़ा घाटा है वह यह कि आप स्वर्ग की प्राप्ति में सफ़ल होने से वंचित रह जाएं, क्योंकि ये ऐसी सुख-सुविधाएं हैं जिनका कभी अंत नहीं होगा एवं ये सुख-सुविधाएं वर्णन से परे हैं, जैसा कि ह़दीस-ए-क़ुदसी में सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है: "मैंने अपने सदाचारी भक्तों के लिए ऐसी सुख-सुविधाएं तैयार की हैं जिनको किसी आंख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना एवं किसी के हृदय में जिनके प्रति विचार भी नहीं आया।" इस वक्तव्य का सत्यापन पवित्र ग्रंथ क़ुरआन से भी होता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٞ مَّآ أُخۡفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعۡيُنٖ جَزَآءَۢ بِمَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ١٧﴾

अर्थात: (कोई जीव नहीं जानता जो कुछ हमने उनकी आंखों की ठंडक उनके लिए गुप्त रखी है, यह उनके उन कर्मों का परिणाम है जो वे करते हैं।)

अल्लाह के भक्तो! आप लोग अपने साथ अत्याचार मत कीजिए, क्योंकि यदि आपने ऐसा किया तो इस बात से अवगत रहिए कि आप ही के लिए बड़ा घाटा होगा एवं आपके अतिरिक्त किसी पर भी इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा, इसका सत्यापन सर्वशक्तिमान अल्लाह के इस कथन से होता है:

﴿وَمَا ظَلَمۡنَٰهُمۡ وَلَٰكِن ظَلَمُوٓاْ أَنفُسَهُمۡۖ﴾

अर्थात: (हमने उनके साथ अन्याय नहीं किया बल्कि उन लोगों ने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया।) इसके अतिरिक्त सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَا ظَلَمۡنَٰهُمۡ وَلَٰكِن كَانُوٓاْ أَنفُسَهُمۡ يَظۡلِمُونَ ١١٨﴾

अर्थात: (हमने उनके साथ अन्याय नहीं किया बल्कि वे लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते थे।)

मेरे प्रिय मुस्लिम भाई! यह बात आपके ऊपर निर्भर है कि आप स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं अथवा नरक-वास होना चाहते हैं, जैसा कि पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "नकारने वाले व्यक्ति को छोड़कर मेरे समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश करेगा, सह़ाबा रज़ियल्लाहुअंहुम ने प्रश्न किया: हे अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ! नकारने वाला व्यक्ति कौन है? अपने उत्तर दिया: जिसने मेरी आज्ञा का पालन किया वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा तथा जिसने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया उसी ने नकार दिया।"

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله رب العالمين، واشهد أن لا إله إلا هو سبحانه، وأشهد أن محمداً ﷺ خير الخلق وإمام الصدق، صلوات ربي وسلامه عليه، وعلى آله وأتباعه الى يوم الدين، أما بعد!

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! आप लोग सर्वशक्तिमान अल्लाह से डरते रहिए ताकि आप सफ़लता प्राप्त कर सकें।

मेरे भाइयो! कितने ही भले तथा सदाचारी पुरुष ऐसे हैं जो अपने बच्चों तथा सगे संबंधियों के प्रति दायित्वों से लापरवाह हो गए, कितने ही बुद्धिमान ऐसे हैं जिन्होंने पूर्ण रूप से अपने घर की महिलाओं तथा बच्चों को बेलगाम छोड़ दिया एवं उनकी देख-रेख को त्याग दिया, इसी प्रकार कितने ही सम्मानित गणमान तथा उच्च पदासीन ऐसे हैं जिन्होंने देख-रेख तथा मार्गदर्शन के दायित्व को भली-भांति महत्व नहीं दिया। जबकि ये सारी बातें बर्बादी और पथभ्रष्टता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं। अल्लाह हमारी मदद करे!

मेरे प्रिय मुस्लिम भाई! आप अपने इस वर्ष को आनंद तथा हर्षोल्लास के साथ संपन्न करने तथा भलाईयों के साथ नए वर्ष का स्वागत करने के प्रति इच्छुक बनें। ऐसे व्यक्ति के लिए शुभकामनाएं हैं जिन्हें भली-भांति ऐसा करने का अवसर मिला।

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد، الله أكبر كبيراً، والحمد لله كثيراً، وسبحان الله بكرة وأصيلاً.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है, अल्लाह सबसे बड़ा तथा महान है, समस्त प्रकार की अधिक से अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता (महिमा) सुबह एवं शाम अल्लाह ही के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! समस्त पैग़म्बरों के सरदार, महान कृपालु, मार्गदर्शक और प्रदान किए गए वरदान स्वरुप पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजिए जैसा कि आप सभी को महान विद्वान एवं महा-ज्ञानी ने अपने कथन के माध्यम से आदेश दिया है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦ ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर ﷺ पर दरूद भेजते हैं, ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! तुम लोग भी उन पर दरूद भेजो और बहुत अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।)

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! ह़ाजियों के ह़ज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

अष्टम उपदेश

ईद-उल-अज़्हा (01)

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اَللهِ وَبَرَكَاتُهُ!

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد، الله أكبر كبيراً، والحمد لله كثيراً، وسبحان الله بكرة وأصيلاً.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है, अल्लाह सबसे बड़ा तथा महान है, समस्त प्रकार की अधिक से अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता (महिमा) सुबह एवं शाम अल्लाह ही के लिए है।

अल्लाह की बड़ाई इतनी बार जितनी बार एक ह़ाजी व्यक्ति ने तलबियह (लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक) की पुकार लगाई एवं अल्लाह की महानता का उल्लेख किया, अल्लाह की बड़ाई उन व्यक्तियों संख्या के समान जिन्होंने ह़ज्ज तथा उ़मरा किया, अल्लाह की बड़ाई रेत के कणों, वृक्ष के पत्तों, पर्वतों में छुपी हुई निधि तथा वर्षा के बूंदों की संख्या के समान, अल्लाह की बड़ाई उसकी समस्त सृष्टि के समान, उसकी प्रसन्नता के समान, उसके अ़र्श (सिंहासन) के भार के समान एवं उसके शब्दों की स्याही के समान, अल्लाह की बड़ाई उन समस्त सृष्टि के सामान जो आकाश, पृथ्वी तथा इन दोनों के बीच हैं एवं उन सृष्टियों के समान जिनकी वह रचना करने वाला है।

अल्लाह सबसे महान है, समस्त प्रकार की अधिक से अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता (महिमा) सुबह एवं शाम अल्लाह ही के लिए है।

समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो अपने भक्तों के निकट उनसे कहीं अधिक होता है जितना वो अल्लाह के निकट होते हैं।

समस्त प्रकार की पवित्रता (महिमा) उस अल्लाह के लिए है जिसने अपनी सृष्टि को विशेष रूप-रेखा प्रदान की तथा उनका मार्गदर्शन किया, उनके लिए मोक्ष तथा विनाश के मार्गों को स्पष्ट किया, उनके ऊपर अपने वरदानों की बरखा बरसा दी और उन्हें प्रत्येक प्रकार की बुराइयों, बलाओं तथा कठिनाइयों से सुरक्षित कर लिया।

الله أكبر الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उसके अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है और समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

मैं गवाही देता हूं कि सर्वशक्तिमान अल्लाह अतिरिक्त को सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं, अल्लाह वह है जिसने अपनी प्रतिज्ञा को सत्य कर दिखाया, अपने भक्तों की सहायता की एवं अकेले ही बहुत से समूहों को पराजित कर दिया। सर्वशक्तिमान अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं वह अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं, समस्त प्रकार का शासन एवं प्रशंसा उसी के लिए है और समस्त चीज़ों पर उसी का नियंत्रण है।

मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ﷺ उसके भक्त, उसके पैग़म्बर, उसके चुने हुए तथा सबसे प्रिय मित्र एवं उसकी पूरी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं, वह एकेश्वरवादियों के पथ-प्रदर्शक, पैग़म्बरों के सरदार, समस्त नबियों के अंतिम संदेशवाहक हैं, इसी प्रकार

वह सबसे श्रेष्ठ मार्गदर्शन, सबसे पूर्ण व्यवहार तथा सबसे सीधे रास्ता के स्वामी हैं, वह सम्पूर्ण सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ तथा समस्त मानवजाति में सबसे पवित्र हैं, सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह ने उन्हें सबसे अंतिम धर्म तथा सबसे पवित्र शरीयत (विधि-विधान) के साथ अवतरित किया जिसकी रातें भी दिन के समान प्रकाशमय हैं, इस विधि-विधान से वही व्यक्ति भटकेगा जो विनाश की ओर जाने वाला होगा।

अतः शुभ सूचना है उस व्यक्ति के लिए जिसका संबंध पैग़म्बर ﷺ के समुदाय से है, कितने ही सौभाग्यशाली हैं वह लोग जिन्हें परलोक में उनके समुदाय के साथ उठाया जाएगा। सर्वशक्तिमान उन पर, उनके परिवारजनों पर, उनके साथियों (सहाबा रज़ियल्लाहुअंहुम) पर तथा उनके समस्त अनुयायियों पर अपनी कृपा करे तथा उन्हें बहुत अधिक क्षेम-कुशल रखे। इन सभी बातों के पश्चात:

सर्व शक्तिमान अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तक पहुंचने के लिए केवल एक ही रास्ता है जिसे परहेज़गारी (संयम) का रास्ता कहा जाता है। यह सर्वशक्तिमान अल्लाह का एक ऐसा व्यापक आदेश है जो समस्त सृष्टियों को प्रत्येक प्रकार की पथ-भ्रष्टता से रोकता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكُمۡ وَإِيَّاكُمۡ أَنِ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ﴾

अर्थात: (वास्तव में जिन लोगों को हमने पूर्व में ग्रंथ दिए एवं तुम लोगों को यही आदेश दिया है कि तुम लोग अल्लाह से डरते रहो।) इसलिए आप लोग उससे डरते रहिए ताकि आप अपने दयालु तथा कृपालु पालनहार की ओर से संतुष्टि वाले घर (स्वर्ग) को प्राप्त करने में सफ़ल हो सकें।

ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَإِذۡ بَوَّأۡنَا لِإِبۡرَٰهِيمَ مَكَانَ ٱلۡبَيۡتِ أَن لَّا تُشۡرِكۡ بِي شَيۡـٔٗا وَطَهِّرۡ بَيۡتِيَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلۡقَآئِمِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ ٢٦
وَأَذِّن فِي ٱلنَّاسِ بِٱلۡحَجِّ يَأۡتُوكَ رِجَالٗا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٖ يَأۡتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٖ ٢٧ لِّيَشۡهَدُواْ مَنَٰفِعَ لَهُمۡ﴾

अर्थात: (और जबकि हमने इब्राहिम अ़लैहिस्सलाम के लिए कअ़बह के स्थान को इस शर्त पर आवंटित कर दिया कि मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं बनाना, मेरे घर का तवाफ़ (चक्कर) लगाने वालों, रात में (तहज्जुद) की नमाज़ अदा करने वालों, शीश झुकने वालों तथा रुकु करने वालों के लिए पवित्र रखना और लोगों में ह़ज्ज की पुकार कर दे, लोग तेरे पास पैदल भी आएंगे, दुबले पतले ऊंटों पर भी और दूर के समस्त रास्तों से आएंगे, वे लोग अपने लाभ की प्राप्ति को आ जाएं।) वो लाभ अनगिनत हैं तथा उनके प्राप्ति में किसी प्रकार का संदेह भी नहीं है:

पहला लाभ:- सर्वशक्तिमान अल्लाह के एकेश्वरवाद को सिद्ध करना, उसकी दासता को अपनाना एवं बहुदेववाद के समस्त रूप-रेखाओं तथा आकारों से बचना ही वास्तव में सबसे बड़ा लाभ है, क्योंकि जीवन का मूल उद्देश्य एकेश्वरवाद को स्थापित करना तथा आस्थाओं की रक्षा करना ही है ताकि इसमें रत्ती भर भी बिगाड़ अथवा भटकाव ना आए। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿حُنَفَآءَ لِلَّهِ غَيۡرَ مُشۡرِكِينَ بِهِۦۚ وَمَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ ٱلسَّمَآءِ فَتَخۡطَفُهُ ٱلطَّيۡرُ أَوۡ تَهۡوِي بِهِ
ٱلرِّيحُ فِي مَكَانٖ سَحِيقٖ ٣١﴾

अर्थात: (अल्लाह के एकेश्वरवाद को मानते हुए उसके साथ किसी को साझीदार बनाने से बचते हुए, सुनो! सर्वशक्तिमान अल्लाह के साथ किसी को साझीदार बनाने वाला ऐसा ही है जैसे कोई आकाश से गिर पड़े, फिर उसे पक्षियां उचक ले जाएंगे अथवा हवा कहीं दूर ले जाकर फेंक देगी।)

दूसरा लाभ:- मुसलमान के बीच सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रति भाईचारे की पुष्टि होती है, ह़ज्ज-ए-अकबर एक ऐसा महान प्रतीक है जो इसे साकार करता है, यह पूर्णतः उस समय स्पष्ट हो जाता है जब सारे ह़ाजी लोग एक ही मैदान में एकत्रित होकर गूंज के साथ पुकार लगते हैं:

لبيك اللهم لبيك، لبيك لا شريك لك لبيك، إن الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك.

अर्थात: "हे अल्लाह हम उपस्थित हैं, हम उपस्थित हैं, तेरा कोई साझीदार नहीं, हम उपस्थित हैं, समस्त प्रकार की प्रशंसा, वरदान तथा शासन तेरे ही लिए है, तेरा कोई साझीदार नहीं।"

तीसरा लाभ:- सर्वशक्तिमान पालनहार की इच्छा अनुसार तक़्वा (संयम) की प्राप्ति होती है, महा पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ شَعَٰٓئِرَ ٱللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقۡوَى ٱلۡقُلُوبِ ٣٢﴾

अर्थात: (यह सुन लिया, अब यह सुनो! अल्लाह के प्रतीकों का जो सम्मान करे उसके हृदय के भयभीत रहने के कारण यह है।)

चौथा लाभ:- जब एक मोमिन (विश्वासी) सर्वशक्तिमान अल्लाह के सम्मानित प्रदेश मक्का तथा वहां के पवित्र स्थलों में होता है एवं ह़ज्ज के परिणाम का आभास करता है तो उसे ईमान की मिठास का स्वाद मिलता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿فَٱجۡعَلۡ أَفۡـِٔدَةٗ مِّنَ ٱلنَّاسِ تَهۡوِيٓ إِلَيۡهِمۡ﴾

अर्थात: (तू कुछ लोगों के हृदयों को उन लोगों की ओर आकर्षित कर दे।)

पांचवां लाभ:- हृदय में सर्वशक्तिमान अल्लाह का भय उत्पन्न होता है तथा उसमें विनम्रता आती है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَبَشِّرِ ٱلۡمُخۡبِتِينَ ٣٤ ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَجِلَتۡ قُلُوبُهُمۡ وَٱلصَّٰبِرِينَ عَلَىٰ مَآ أَصَابَهُمۡ وَٱلۡمُقِيمِي ٱلصَّلَوٰةِ وَمِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ يُنفِقُونَ ٣٥﴾

अर्थात: (उन विनम्रता के अपनाने वाले को शुभ संदेश दे दीजिए, जिनके समक्ष जब सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण किया जाता है तो उनके हृदय थर्रा जाते हैं।)

छठा लाभ:- धैर्य सिद्ध होता है तथा नमाज़ एवं दान-पुण्य के सर्वोच्च स्तरों की प्राप्ति होती है। सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का कथन है:

﴿ وَٱلصَّٰبِرِينَ عَلَىٰ مَآ أَصَابَهُمۡ وَٱلۡمُقِيمِي ٱلصَّلَوٰةِ وَمِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ يُنفِقُونَ ٣٥ ﴾

अर्थात: (उन्हें जो कठिनाई हो उन पर वह धैर्य से काम लेते हैं नमाज़ अदा करते हैं एवं हमने उन्हें जो जीविका प्रदान की है उनमें से दान-पुण्य करते हैं।)

सातवां लाभ:- शारीरिक अंग अच्छे मार्ग पर अडिग रहते हैं तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह की इच्छा अनुसार अपने आचरण का सुधार होता है। सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का कथन है:

﴿فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلۡحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي ٱلۡحَجِّۗ وَمَا تَفۡعَلُواْ مِنۡ خَيۡرٖ يَعۡلَمۡهُ ٱللَّهُۗ﴾

अर्थात: (जो व्यक्ति उनमें ह़ज्ज को अनिवार्य कर ले वह अपनी पत्नी से संभोग करने, बात करने और लड़ाई-झगड़ा करने से बचता रहे, तुम जो भी सुकर्म करोगे उससे सर्वशक्तिमान अल्लाह भली भांति-अवगत है।)

आठवां लाभ:- सर्वशक्तिमान अल्लाह की कृपाओं की चाहत होती है एवं सर्वशक्तिमान अल्लाह का भक्त पृथ्वी के सबसे पवित्र स्थान पर होता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ثُمَّ لۡيَقۡضُواْ تَفَثَهُمۡ وَلۡيُوفُواْ نُذُورَهُمۡ وَلۡيَطَّوَّفُواْ بِٱلۡبَيۡتِ ٱلۡعَتِيقِ ٢٩﴾

अर्थात: (फिर वे अपना मैले-कुचैले दूर करें एवं अपनी मिन्नतें पूरी करें और अल्लाह के पुराने घर का तवाफ़ (चक्कर) लगाएं।)

नौवां लाभ:- सर्वशक्तिमान अल्लाह के महान प्रतीकों का सम्मान होता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ حُرُمَٰتِ ٱللَّهِ فَهُوَ خَيۡرٞ لَّهُۥ عِندَ رَبِّهِۦۗ﴾

अर्थात: (यह है और जो कोई अल्लाह के प्रतीकों का सम्मान करे उसके लिए उसके पालनहार के पास सर्वश्रेष्ठ उपहार है।)

दसवां लाभ:- सर्वशक्तिमान अल्लाह के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए आजीविका की खोज करना तथा सर्वश्रेष्ठ अवसर में वैध कमाई करना। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿لَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ جُنَاحٌ أَن تَبۡتَغُواْ فَضۡلٗا مِّن رَّبِّكُمۡۚ﴾

अर्थात: (अपने पालनहार के अनुग्रह को खोजने में तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा।)

ग्यारहवां लाभ:- सर्वशक्तिमान अल्लाह का अधिक से अधिक स्मरण किया जाता है। सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का कथन है:

﴿فَإِذَا قَضَيۡتُم مَّنَٰسِكَكُمۡ فَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ كَذِكۡرِكُمۡ ءَابَآءَكُمۡ أَوۡ أَشَدَّ ذِكۡرٗاۗ﴾

अर्थात: (फिर जब तुम ह़ज्ज के सभी स्तंभों को पूरा कर लो तो सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करो जिस प्रकार तुम अपने पूर्वजों का स्मरण किया करते थे।)

बारहवां लाभ:- सर्वशक्तिमान अल्लाह के पास परलोक में मिलने वाले उपहार की प्राप्ति के प्रति मन में इच्छा जागृत होती है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَمِنۡهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنۡيَا حَسَنَةٗ وَفِي ٱلۡأٓخِرَةِ حَسَنَةٗ وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ٢٠١﴾

अर्थात: (और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें इस संसार में भलाई दे तथा परलोक में भी भलाई प्रदान कर एवं हमें नरक के प्रकोप से बचा दे।)

तेरहवां लाभ:- सर्वशक्तिमान अल्लाह की आज्ञाओं का अनुसरण होता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿لَن يَنَالَ ٱللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلَٰكِن يَنَالُهُ ٱلتَّقۡوَىٰ مِنكُمۡۚ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह को बलिदान दिए गए (पशुओं) के मांस नहीं पहुंचते ना ही उसके रक्त पहुंचते हैं बल्कि उसे तो तुम्हारे हृदय की पवित्रता तथा शुद्धता पहुंचती है।)

चौदहवां लाभ:- सर्वशक्तिमान अल्लाह के लिए पशुओं को काटा जाता है तथा उनकी क़ुर्बानी (बलि) दी जाती है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ وَٱلۡبُدۡنَ جَعَلۡنَٰهَا لَكُم مِّن شَعَٰٓئِرِ ٱللَّهِ لَكُمۡ فِيهَا خَيۡرٞۖ﴾

अर्थात: (बलिदान के ऊंट में हमने तुम्हारे लिए सर्वशक्तिमान अल्लाह का प्रतीक बनाया है, उनमें तुम्हारे लिए लाभ है।) पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "नह्र के दिन (पशु को बलि देने के दिन) सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट एक व्यक्ति का सबसे प्रिय कार्य रक्त बहाना है, प्रलय दिवस में बलिदान के पशु अपनी सींगों, बालों तथा खुरों के साथ आएंगे, बलिदान का रक्त धरती पर गिरने से पूर्व ही स्वीकार्य का स्थान प्राप्त कर लेता है, इसलिए हर्षित होकर बलिदान दिया करो।" बलिदान देने के लिए कुछ शर्तें हैं: जानवर का संबंध ऊंट, गाय अथवा बकरी जैसे पशुओं से हो, इस्लामी विधि-विधान द्वारा निर्धारित आयु सीमा को वो मवेशी पहुंचे हुए हों, अर्थात: ऊंट पांच वर्षों तथा उससे अधिक का हो, गाय दो या उससे अधिक वर्षों का हो, बकरी एक या उससे अधिक वर्ष का और भेड़ आदि छः महीने या उससे अधिक के हों, ये मवेशी समस्त प्रकार के रोग तथा दोष से मुक्त हों, बलिदान देने के समय का ध्यान हो जो कि नह्र (बलिदान) के दिन ईद-उल-अज़्हा की नमाज़ के पश्चात से लेकर ज़िल्हिज्जा की तेरहवीं तिथि को सूर्यास्त से पहले तक है। इस संबंध में पैग़म्बर मुहम्मद ﷺ की सुन्नत यह है कि एक तिहाई भाग स्वयं खा लिया जाए, एक तिहाई भाग अपने नातेदारों को दे दिया जाए तथा एक तिहाई भाग निर्धन लोगों में वितरण कर दिया जाए। पशु को बलिदान देने में जितनी अधिक शीघ्रता को अपनाया जाए उतना ही अच्छा है इसी प्रकार रात्रि की तुलना में दिन में बलिदान देना अधिक श्रेष्ठ है।

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा हदीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान

अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر
لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد، الله أكبر كبيراً، والحمد لله كثيراً، وسبحان الله بكرة وأصيلاً.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है, अल्लाह सबसे बड़ा तथा महान है, समस्त प्रकार की अधिक से अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता (महिमा) सुबह एवं शाम अल्लाह ही के लिए है।

समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने अपने आज्ञाकार भक्तों को सम्मान दिया तथा उन्हें अपने से निकट किया एवं जिन लोगों ने अवज्ञा की तथा सीमाओं को लांघते हुए शिष्टाचार के नियमों की अवहेलना की उन्हें अपमानित किया।

समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो हृदय की बातों तथा अंदरूनी भेदों से अवगत है।

समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसके उपकारों तथा बुद्धिमत्ताओं से अच्छे कार्य संपन्न होते हैं, भलाईयों में वृद्धि होती है तथा अच्छाइयां बढ़ती हैं।

समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसकी कृपा से पछतावे के बादल छंट जाते हैं तथा घोर अंधेरी कठिनाइयां टल जाती हैं।

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं।

मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ﷺ उसके पैग़म्बर हैं, यह गवाही सच्चाई, सत्यनिष्ठा तथा न्याय पर आधारित है, सर्वशक्तिमान अल्लाह उनके ऊपर, उनके सहाबा (साथियों) पर तथा दोबारा जीवित किए जाने के दिन (परलोक दिवस) तक उनका अनुसरण करने वालों पर अपनी कृपा करे तथा उनकी रक्षा करे।

मेरे प्रिय ह़ाजी भाइयो! आप लोग ह़ज्ज से संबंधित शेष रह गए अनुष्ठानों को अल्लाह से भयभीत हो कर, तसल्ली, विनम्रता तथा शांति के साथ संपन्न कीजिए, इसके साथ-साथ ह़ज्ज के इन पावन प्रतीकों को हार्दिक तथा मानसिक रूप से ध्यान में रखिए।

अल्लाह के भक्तो! ह़ज्ज से संबंधित **पंद्रहवां लाभ** यह है कि यह सर्वशक्तिमान अल्लाह के मार्गदर्शन को दृढ़ता पूर्वक अपनाने, उस पर चलने तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह के पवित्र विधि-विधान को लागू करने हेतु आवाह्न है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ ﴾

अर्थात: (और प्रत्येक समुदाय के लिए हमने बलिदान देने की एक विधि निर्धारित की है ताकि वे उन मवेशियों पर सर्वशक्तिमान अल्लाह का नाम ले सकें।) और हज्ज इसी विशेष अनुष्ठान नाम है।

महा पवित्र अल्लाह का विधि-विधान वह है जिसने संसार में समस्त मानव जाति की सफ़लता, कल्याण उनके बीच सच्चे संबंधों को स्थापित करने और पूरे संसार में सुधार लाने की गारंटी ली है, इसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तथा दृष्टि में मानवीय हितों की सुरक्षा की है, न्याय, भाईचारा, समानता, प्रेम तथा मेल-मिलाप की सभी अवधारणाओं की सिद्धि को सुनिश्चित किया है, सद्गुणों तथा नैतिक मूल्यों को प्रसारित करने के प्रति विश्वास दिलाया है, बुराई, कुरूपता तथा अपराध के सभी स्रोतों को जड़ को उखाड़ फेंकने की ज़िम्मेदारी ली है, सांसारिक तथा पारलौकिक जीवन में भलाई को सुनिश्चित किया है, समस्त समस्याओं पथ-भ्रष्टता तथा अराजकता के सभी कारणों से मुक्ति दिलाता है, सभी मानवीय आवश्यकताओं को, जीवन की समस्त अनिवार्यताओं को पूरा करने तथा आत्मिक एवं शारीरिक ज़रूरतों को पूरा करने का दायित्व निभाता है।

सर्वशक्तिमान अल्लाह द्वारा निर्धारित किए गए विधि-विधान वो हैं जिनके समस्त उद्देश्यों, शिक्षाओं, मूल्यों, निर्देशों, सीमाओं, सिद्धांतों, प्रतीकों, अनुष्ठानों, लक्ष्यों, प्रयासों, आदेशों, निषिद्धताओं, वैध-अवैध, प्रोत्साहन, चेतावनी, प्रेरणा तथा रोक-टोक का केवल एक तात्पर्य समस्त मानव जाति के लिए दो चीज़ों को सुनिश्चित करना है: समृद्ध सांसारिक जीवन एवं इसके पश्चात परलोक में शाश्वत सफ़लता तथा कभी समाप्त नहीं होने वाली सुख-सुविधाएं।

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! यदि सर्वशक्तिमान अल्लाह का धर्म मानव जाति के लिए एक पर्याप्त पद्धति, संपन्न विधि, एकीकृत व्यवस्था, उपचारकारी विधान एवं सटीक तथा सीधा मार्ग ना हों, इसी प्रकार मानव जाति को यह सभी अर्थ सच्चे धर्म तथा पवित्र विधि-विधान में नहीं मिलें तो मानो कि ऐसी स्थिति में मानव जाति के भाग्य में ऐसी निरंतर दुर्दशा लिख दी गई जिससे सुरक्षित रह पाना असंभव है, फिर सभी लोग संघर्ष के भंवर, सामाजिक विषमताओं, विवादों एवं मतभेदों के अंतहीन स्तरों, विरोधाभासों की आग, व्यक्तिगत विचारों एवं मनमानी के बिखराव में फंसे रहेंगे।

मानव निर्मित संविधान एवं मानवीय व्यवस्थाएं जिनका कई राष्ट्रों ने लंबे समय तक इस भ्रम के साथ आनंद लिया कि ये उनके लिए लाभकारी हैं, परंतु मानव जाति उनमें भटक गई, जबकि वे लोग उनमें मार्गदर्शन की खोज कर रहे थे। फिर जब सर्वशक्तिमान अल्लाह का आदेश हुआ और उसने अनुमति दी तो बदलाव की ऐसी लहरें उठीं जिसने इन व्यवस्थाओं एवं संविधानों को जड़ से उखाड़ फेंका, इन लहरों ने अपने मार्ग में आने वाले प्रत्येक उस अंश को मिटा दिया जिसने उन्हें अपनाया तथा उजागर किया और इस बात को स्पष्ट कर दिया कि इन व्यवस्थाओं ने कई वर्षों से राष्ट्रों तथा लोगों को किस स्तर तक भ्रष्ट तथा बर्बाद कर दिया है।

अल्लाह के भक्तो! वास्तव में सर्वशक्तिमान अल्लाह के धर्म को समझने की हमें तीव्र आवश्यकता है, विशेष कर तब जब हम लोग धर्म और ज्ञान के देश में हैं और यह ज्ञान प्राप्त करना हमारे लिए तभी संभव होगा जब हम सर्वशक्तिमान

अल्लाह से संबंध रखने वाले उन महान विद्वानों से जुड़ कर रहेंगे जो सत्यता पर अडिग रहे, फिर उन्हीं के माध्यम से सबसे कठिन समय तथा अंधकार के युग में भी समस्त समुदाय के लोगों को उन्नति प्राप्त हुई।

ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! सर्वशक्तिमान अल्लाह के इस आदेश को पूरा कीजिए जिसमें उसका कथन है:

﴿وَٱعْتَصِمُواْ بِحَبْلِ ٱللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُواْۚ﴾

अर्थात: (लोगो! सर्वशक्तिमान अल्लाह की रस्सी को तुम सभी कठोरता पूर्वक पड़े रहो और गुटबाज़ी नहीं करो।) ज्ञात हुआ कि सर्वशक्तिमान अल्लाह की रस्सी को कठोरता पूर्वक थामना ही उस युग में एकमात्र सहारा है जिसमें धर्म की अपरिचितता फैल चुकी है, जिसके कारण अज्ञानता तथा अज्ञानी लोग उभर कर सामने आए हैं, पाखंडियों तथा उपद्रवियों का बोलबाला होने लगा है, जबकि सच्चा ज्ञान तथा सच्चे विद्वान लोग एवं वफ़ादार तथा ईमानदार लोग ओझल होते चले गए हैं।

أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

मेरे भाइयो! सर्वशक्तिमान अल्लाह के महान वरदानों तथा अनगिनत उपकारों पर अधिक से अधिक उसका आभार व्यक्त कीजिए, आप लोग मक्का तथा मदीना की पावन धरती पर हैं, जहां शांति, स्वस्थ जीवन, संतुष्टि तथा समृद्धि का बोलबाला है। आप लोग अपने महा पवित्र पालनहार के समक्ष क्षमा-याचना कीजिए, उसके संबंध में अच्छा विचार रखिए, आप लोग अपनी समझ तथा अपने धार्मिक मामलों पर ध्यान दीजिए ताकि आप को सफ़लता प्राप्त हो सके। अफवाहों, भ्रमित कारक सूचनाओं तथा षड्यंत्र से सावधान रहिए क्योंकि इनमें भारी विनाश तथा स्पष्ट तबाही है।

अपने धार्मिक विद्वानों का विरोध नहीं कीजिए एवं अपने शासको की आज्ञाकारिता करने से बाहर नहीं निकलिए और संयम तथा मध्यम मार्ग को दृढ़ता पूर्वक थामे रहिए, क्योंकि सच्चे मार्गदर्शन का यही एक रास्ता है।

अपने ईमानी पहलू (विश्वसनीय दृष्टि) को सशक्त बनाइये, अपने आप को और अपने परिवार जनों को उस दहकती आग एवं कभी समाप्त नहीं होने वाले पछतावे से बचाइए जो अपमानजनक नरक की गहराइयों में हैं।

सच्चे मार्गदर्शन तथा शरीयत (विधि-विधान) को दृढ़ता पूर्वक थामे रहिए, इसके अतिरिक्त किसी और पथ पर चलने से बचते रहिए क्योंकि यही सबसे सीधा मार्ग है, जिसके संबंध में सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सत्य ही कहा है:

﴿وَأَنَّ هَٰذَا صِرَٰطِي مُسْتَقِيمًا فَٱتَّبِعُوهُۖ وَلَا تَتَّبِعُواْ ٱلسُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِۦۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّىٰكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ١٥٣﴾

अर्थात: (और यह कि यह धर्म मेरा मार्ग है जो सीधा है, इसलिए इस मार्ग पर चलो और दूसरे मार्गो पर नहीं चलो क्योंकि वे सभी मार्ग तुमको सर्वशक्तिमान अल्लाह के मार्ग से भिन्न कर देंगे, इसका तुमको सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कठोरता पूर्वक आदेश दिया है ताकि तुम लोग संयमी बन जाओ।)

फिर आप लोग 'मुज़र' परिवार के व्यक्ति मुहम्मद ﷺ पर दरूद भेजिए जो संसार तथा उनमें पाई जाने वाली समस्त सृष्टियों के सरदार हैं। हे अल्लाह! अपनी कृपा, रक्षा तथा बरकतें उस अ़ब्दुल्लाह के सुपुत्र मुहम्मद ﷺ पर अवतरित कर जो सम्पूर्ण सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं एवं संयमी लोगों के सरदार हैं, इसी प्रकार उनके परिवार जनों पर, उनके सहा़बा (साथियों)

एवं उनका अनुसरण करने वालों पर। हे अल्लाह! तू क्षमा और कृपा करते हुए उनके साथ हमें भी शामिल करले। हे महान कृपालु!!

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! हाजियों के हज्ज को, उमरा करने वाले के उमरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य हज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

नवम उपदेश

ईद-उल-अज़हा (02)

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اَللهِ وَبَرَكَاتُهُ!

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

الله أكبر عدد ما هلل حاج وكبر. الله أكبر تعداد من حج واعتمر. الله أكبر عدد ما هطل وابل وأمطر غيث وانهمر. الله أكبر عدد حباب الحصى، وورق الشجر، وما منه أزهر. الله أكبر عدد كثبان الرمال، والنجوم الغرر. الله أكبر عدد خلقه ورضا نفسه وزنة عرشه ومداد كلماته. الله أكبر عدد ما خلق في السماء وعدد ما خلق في الأرض وعدد ما بين ذلك وعدد ما هو خالق. الله أكبر كبيراً والحمد لله كثيراً وسبحان الله بكرة وأصيلاً.

اللهم لك الحمد كما ينبغي لوجهك وعظيم سلطانك حمداً كثيراً طيباً مباركاً فيه. سبحان الذي خلق الخلق بالحق. وشرع لهم المنهج الصدق. الحمد لله الذي أوجد من عدم، وأمد بعموم النعم، ودفع عن عباده جمع النقم.

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

أشهد ان لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير. وأشهد أن محمداً عبده ورسوله وصفيه وخليله وخيرته من خلقه ﷺ أعلم الناس بالله تعالى وأتقاهم لربه الكبير.

عباد الله! تقوى الله تعالى منهج الأنبياء عليهم السلام، أوصى بها الجليل في كل شرائعه، وفي الذكر الحكيم قوله تعالى:

﴿وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكُمۡ وَإِيَّاكُمۡ أَنِ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ﴾

अर्थात: (वास्तव में जिन लोगों को हमने पूर्व में ग्रंथ दिए एवं तुम लोगों को यही आदेश दिया है कि तुम लोग अल्लाह से डरते रहो।) इसलिए आप लोग उससे डरते रहिए ताकि आप अपने दयालु तथा कृपालु पालनहार की ओर से संतुष्टि वाले घर (स्वर्ग) को प्राप्त करने में सफ़ल हो सकें।

أما بعد!

अल्लाह के भक्तो! ह़ज्ज के अंदर सृष्टि के लिए विभिन्न प्रकार के लाभ हैं तथा ऐसी भलाइयां हैं जो एक के बाद सामने आती रहती हैं, जैसे:

ह़ज्ज के अंदर सर्वशक्तिमान अल्लाह के एकेश्वरवाद की सिद्धि होती है तथा बहुदेववाद से सुरक्षा मिलती है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿حُنَفَآءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِۦۚ وَمَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ ٱلسَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ ٱلطَّيْرُ أَوْ تَهْوِى بِهِ
ٱلرِّيحُ فِى مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿٣١﴾﴾

अर्थात: (अल्लाह के एकेश्वरवाद को मानते हुए उसके साथ किसी को साझीदार बनाने से बचते हुए, सुनो! सर्वशक्तिमान अल्लाह के साथ किसी को साझीदार बनाने वाला ऐसा ही है जैसे कोई आकाश से गिर पड़े, फिर उसे पक्षियां उचक ले जाएंगे अथवा हवा कहीं दूर ले जाकर फेंक देगी।)

ह़ज्ज के अंदर तक़्वा (भय) की सिद्धि होती है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَتَزَوَّدُواْ فَإِنَّ خَيْرَ ٱلزَّادِ ٱلتَّقْوَىٰۖ وَٱتَّقُونِ يَٰٓأُوْلِى ٱلْأَلْبَٰبِ﴿١٩٧﴾﴾

अर्थात: (सर्वश्रेष्ठ पाथेय सर्वशक्तिमान अल्लाह का डर है, ऐ बुद्धिजीवियो! मुझसे डरते रहा करो।)

ह़ज्ज के अंदर धार्मिक भाईचारे की पुष्टि होती है, यही कारण है कि ह़ज्ज करने सभी लोग उच्च स्वर के साथ पुकार लगते हैं:

لبيك اللهم لبيك، لبيك لا شريك لك لبيك، إن الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك.

अर्थात: "हे अल्लाह हम उपस्थित हैं, हम उपस्थित हैं, तेरा कोई साझेदारी नहीं, हम उपस्थित हैं, समस्त प्रकार की प्रशंसा, वरदान तथा शासन तेरे ही लिए है, तेरा कोई साझीदार नहीं।"

ह़ज्ज के अंदर सर्वशक्तिमान अल्लाह के धार्मिक प्रतीकों का सम्मान होता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمْ شَعَٰٓئِرَ ٱللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقْوَى ٱلْقُلُوبِ ﴿٣٢﴾﴾

अर्थात: (यह सुन लिया, अब यह सुनो! अल्लाह के प्रतीकों का जो सम्मान करे उसके हृदय के भयभीत रहने के कारण यह है।)

ह़ज्ज के अंदर एक मुस्लिम व्यक्ति अल्लाह के पवित्र घर तथा पावन स्थलों के खुले मैदानों में रहते हुए ईमान की मिठास को चखता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿فَٱجْعَلْ أَفْـِٔدَةً مِّنَ ٱلنَّاسِ تَهْوِىٓ إِلَيْهِمْ ﴾

अर्थात: (तू कुछ लोगों के हृदयों को उन लोगों की ओर आकर्षित कर दे।)

ह़ज्ज के अंदर एक एक मुसलमान (अपने हृदय में) अल्लाह के श्रद्धापूर्ण भय और विस्मय को अनुभूत करता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَبَشِّرِ ٱلْمُخْبِتِينَ﴿٣٤﴾ ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ ﴾

अर्थात: (उन विनम्रता के अपनाने वाले को शुभ संदेश दे दीजिए, जिनके समक्ष जब सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण किया जाता है तो उनके हृदय थर्रा जाते हैं।)

ह़ज्ज के अंदर मनुष्य के शारीरिक अंग सत्य मार्ग को अपना लेते हैं तथा उनके व्यवहार में सुधार आ जाता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلۡحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي ٱلۡحَجِّۗ﴾

अर्थात: (जो व्यक्ति उनमें ह़ज्ज को अनिवार्य कर ले वह अपनी पत्नी से संभोग करने, बात करने और लड़ाई-झगड़ा करने से बचता रहे।)

ह़ज्ज के अंदर सर्वशक्तिमान अल्लाह के पास जो सांसारिक तथा पारलौकिक भलाइयां हैं, उनकी प्राप्ति की इच्छा होती है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ثُمَّ لۡيَقۡضُواْ تَفَثَهُمۡ وَلۡيُوفُواْ نُذُورَهُمۡ وَلۡيَطَّوَّفُواْ بِٱلۡبَيۡتِ ٱلۡعَتِيقِ ٢٩﴾

अर्थात: (फिर वे अपना मैले-कुचैले दूर करें एवं अपनी मिन्नतें पूरी करें और अल्लाह के पुराने घर का तवाफ़ (चक्कर) लगाएं।)

ह़ज्ज के अंदर अवैध तथा निषिद्ध चीज़ों से वंचित रहा जाता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ حُرُمَٰتِ ٱللَّهِ فَهُوَ خَيۡرٞ لَّهُۥ عِندَ رَبِّهِۦۗ﴾

अर्थात: (यह है और जो कोई अल्लाह के प्रतीकों का सम्मान करे उसके लिए उसके पालनहार के पास सर्वश्रेष्ठ उपहार है।)

ह़ज्ज के अंदर महा पवित्र अल्लाह के अनुग्रह तथा आजीविका की खोज की जाती है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿لَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ جُنَاحٌ أَن تَبۡتَغُواْ فَضۡلٗا مِّن رَّبِّكُمۡۚ﴾

अर्थात: (अपने पालनहार के अनुग्रह को खोजने में तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा।)

ह़ज्ज के अंदर सर्वशक्तिमान अल्लाह का अधिक से अधिक स्मरण किया जाता है। अल्लाह का कथन है:

﴿فَإِذَا قَضَيۡتُم مَّنَٰسِكَكُمۡ فَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ كَذِكۡرِكُمۡ ءَابَآءَكُمۡ أَوۡ أَشَدَّ ذِكۡرٗاۗ﴾

अर्थात: (फिर जब तुम ह़ज्ज के सभी स्तंभों को पूरा कर लो तो सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करो जिस प्रकार तुम अपने पूर्वजों का स्मरण किया करते थे।)

ह़ज्ज के अंदर एक मुस्लिम व्यक्ति स्वर्ग की प्राप्ति तथा नरक से मुक्ति की इच्छा करता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَمِنۡهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنۡيَا حَسَنَةٗ وَفِي ٱلۡأٓخِرَةِ حَسَنَةٗ وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ٢٠١﴾

अर्थात: (और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें इस संसार में भलाई दे तथा परलोक में भी भलाई प्रदान कर एवं हमें नरक के प्रकोप से बचा दे।)

ह़ज्ज के अंदर सर्वशक्तिमान अल्लाह के आदेश का पालन किया जाता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿لَن يَنَالَ ٱللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلَٰكِن يَنَالُهُ ٱلتَّقْوَىٰ مِنكُمْۚ﴾

अर्थात: (सर्वशक्तिमान अल्लाह को बलिदान दिए गए (पशुओं) के मांस नहीं पहुंचते ना ही उसके रक्त पहुंचते हैं बल्कि उसे तो तुम्हारे हृदय की पवित्रता तथा शुद्धता पहुंचती है।)

ह़ज्ज के अंदर सर्वशक्तिमान अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए तथा उसकी आज्ञाकारी करते हुए धरती पर (पशुओं का) रक्त बहाया जाता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿وَٱلْبُدْنَ جَعَلْنَٰهَا لَكُم مِّن شَعَٰٓئِرِ ٱللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌۖ﴾

अर्थात: (बलिदान के ऊंट में हमने तुम्हारे लिए सर्वशक्तिमान अल्लाह का प्रतीक बनाया है, उनमें तुम्हारे लिए लाभ है।)

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! इसी दिन के जैसे दिन में मार्गदर्शक पैग़म्बर ﷺ ने 'मिना' नामक स्थल पर एक बहुत ही व्यापक उपदेश दिया जिसमें उन्होंने पवित्र शरीयत (विधि-विधान) के मार्ग को स्पष्ट किया, पैग़म्बर ﷺ ने जो भी उपदेश दिए उन में से एक बात यह थी: "तुम्हारा जीवन, तुम्हारी धन-संपत्ति तथा तुम लोगों के मान-सम्मान एक दूसरे के लिए उसी प्रकार पवित्र हैं जिस प्रकार तुम्हारा यह आज का दिन, तुम्हारा यह प्रदेश तथा तुम्हारा यह महीना पवित्र है।" पैग़म्बर ﷺ का उद्देश्य पांच अनिवार्यताओं धर्म, प्राण, बुद्धि, सम्मान तथा धन-संपत्ति के संरक्षण के आधार को सशक्त बनाना था, क्योंकि उनकी सुरक्षा के बिना सांसारिक जीवन की स्थिरता संभव नहीं है।

अल्लाह के भक्तो! विभाजन, मतभेद, गुटबाज़ी तथा अपने विचार पर घमंड करना, यह सारी ऐसी बातें हैं जो एक व्यक्ति को इस प्रकार नष्ट कर देंगी जिनके पश्चात उनके लिए सत्य का देख पाना असंभव हो जाएगा।

इस्लाम शांति और सद्भाव का संदेश लेकर आया है, वास्तविक शांति इस्लाम के बिना संभव ही नहीं है, अतः जिस व्यक्ति ने इस मार्ग से विमुखता दिखलाई वास्तव में उसने शांति को त्याग दिया।

अल्लाह के भक्तो! यह पवित्र शरीयत (विधि-विधान) पूजा-आराधना तथा सामाजिक व्यवहार का धर्म है, यह विधि-विधान संसार एवं परलोक के लिए भी है, अपने साथ-साथ दूसरे के लिए भी है एवं व्यक्तियों के साथ-साथ समाजों के लिए भी है। यह पवित्र धर्म फ़िक़्ह (गहरी समझ), पद्धति, निर्धारित सीमाओं, आदेशों, शिक्षाओं तथा मार्गदर्शनों का नाम है, वास्तविक प्रगति तथा सभ्यता इसी में पाई जाती है, यह गौरव तथा प्रतिष्ठा का मार्ग है जहां सभी समान हैं, पैग़म्बर ﷺ का कथन है: "अल्लाह के भक्तो! तुम लोग आपस में भाई-भाई बनकर रहो।" अतः आप लोग हर उसे चीज़ से सावधान रहिए जो आपके धर्म को नष्ट कर दे ताकि आप सफ़ल हो सकें।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान

अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله الذي بنعمته تتم الصالحات، شرع للعباد مواطن رحمات ومواسم قربات. وأصلي وأسلم وأبارك على خير البريات محمد ﷺ وعلى الآل والصحب والأتباع ومن على آثارهم اقتفى بالمتابعات.

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! आज के दिन सबसे श्रेष्ठ कार्यों में से एक वह है जिसका उल्लेख पैग़म्बर ﷺ ने अपने कथन में कुछ इस प्रकार किया है: "नह़्र के दिन (पशु को बलि देने के दिन) सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट एक व्यक्ति का सबसे प्रिय कार्य रक्त बहाना है, प्रलय दिवस में बलिदान के पशु अपनी सींगों, बालों तथा खुरों के साथ आएंगे, बलिदान का रक्त धरती पर गिरने से पूर्व ही स्वीकार्य का स्थान प्राप्त कर लेता है, इसलिए हर्षित होकर बलिदान दिया करो।"

इसलिए आप लोग ऊंट, गाय, भेड़ अथवा बकरी जैसे समान चौपाइयों में से किसी एक का बलिदान देकर उसे सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत कीजिए, -सर्वशक्तिमान आपके सुकर्मों को स्वीकार करे- और इसके लिए आप ऐसा मवेशी खोजिए समस्त प्रकार के रोग तथा दोष से मुक्त हो एवं निर्धारित आयु को पहुंचा हुआ हो। यह बलिदान हमारे इस ईद-उल-अज़्हा की नमाज़ के पश्चात से लेकर ज़िल्हिज्जा की तेरहवीं तिथि को सूर्यास्त से पहले तक दिया जा सकता है।

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! अफवाहों तथा पथ-भ्रष्ट करने वाली बातों से सावधान रहो, पैग़म्बर ﷺ की ह़दीस में उल्लेखित है: "शीघ्र ही दूसरे समुदाय के लोग तुम पर ऐसे ही टूट पड़ेंगे जैसे खाने वाले प्यालों पर टूट पड़ते हैं, तो एक कहने वाले ने कहा: क्या उस समय हमारी जनसंख्या कम होगी? आप ﷺ ने उत्तर दिया: नहीं, उस समय तुम्हारी जनसंख्या बहुत होगी, परंतु तुम बाढ़ के (पानी की) झाग के समान होगे, सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं के भीतर से तुम्हारा डर निकाल देगा और तुम्हारे ह्रदयों में 'वह्न' डाल देगा, तो एक कहने वाले ने कहा: हे अल्लाह के पैग़म्बर ﷺ! 'वह्न' क्या चीज़ है? तो आप ﷺ ने उत्तर दिया: यह सांसारिक जीवन से प्रेम तथा मृत्यु से डर है।"

अल्लाह के भक्तो! सांसारिक जीवन से प्रेम ही हर ऐसे पाप की जड़ है जो तार-तार कर देता है, विभाजित कर देता है तथा बिखेर देता है और इस संकट से निकलने का केवल एक ही मार्ग है और वह है सर्वशक्तिमान अल्लाह के धर्म को दृढ़ता पूर्वक अपनाए रखना।

मेरे प्रिय ह़ाजी भाइयो! ह़ज्ज से संबंधित अनुष्ठानों को पूरी निष्ठा के साथ सम्पन्न करने तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह के एकेश्वरवाद तथा उसके द्वारा निर्धारित किए गए एक विधि-विधान को सर्वोपरि मानने एवं उसे अपनाने हेतु तत्पर रहिए और इस बात को लेकर अपने आप को सौभाग्यशाली समझिए कि आपकी उपस्थिति पुराने घर (कअ़बह) के आसपास है एवं जब तक आप इसके प्रांगण में है पूर्णतः शिष्टाचार के साथ रहें।

मेरे प्रिय भाइयो! आप लोग इस बात पर उस अल्लाह का आभारी बनिए जो महा-शासक भी है तथा सबसे बड़ा ज्ञानी भी है कि उसने आप लोगों को असीम भलाईयों तथा महान वरदानों से लाभान्वित किया है और उसने आपके भाग्य में जो कुछ लिख दिया है उस पर धैर्य से काम लीजिए एवं सदैव उसका स्मरण करते रहिए।

मेरे प्रिय मुस्लिम भाई! आप अपने भाइयों के साथ विनम्र बनिए, अपने परिवारों तथा नातेदारों का शुभचिंतक बनिए, लोगों के साथ सभ्य व्यवहार रखिए, अपने देश के निर्माण में योगदान दीजिए, अच्छाई के निर्माण तथा सकारात्मक बदलाव का माध्यम बनिए, लोगों को क्षमा कीजिए तथा अपने भाई की अनुपस्थिति में उनके लिए प्रार्थना कीजिए, दूसरों की त्रुटियों को क्षमा कीजिए, उनकी चूक से दृष्टि को फेर लीजिए एवं उनकी कमियों पर (कभी-कभी) आंख मूंद लीजिए, मानव जाति के सरदार पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को दृढ़ता पूर्वक थाम लीजिए, लाभदायक ज्ञान अर्जित कीजिए, पथ-भ्रष्ट करने वाले व्यक्तियों से सावधान रहिए, अफ़वाहों से दूरी बनाए रखिए एवं अपने धार्मिक मामलों में सच्चाई की खोज कीजिए, क्योंकि स्वर्ग की प्राप्ति बहुमूल्य सौदा है जो प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त नहीं होगा, इसलिए आप स्वयं को ऐसे कम लोगों की पंक्ति में रखिए जो स्वर्ग की प्राप्ति में सफ़ल होने वाले हैं।

फिर आप लोग 'मुज़र' परिवार के व्यक्ति मुहम्मद ﷺ पर दरूद भेजिए जो संसार तथा उनमें पाई जाने वाली समस्त सृष्टियों के सरदार हैं। हे अल्लाह! अपनी कृपा, रक्षा तथा बरकतें उस अ़ब्दुल्लाह के सुपुत्र मुहम्मद ﷺ पर अवतरित कर जो सम्पूर्ण सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं एवं संयमी लोगों के सरदार हैं, इसी प्रकार उनके परिवार जनों पर, उनके सह़ाबा (साथियों) एवं उनका अनुसरण करने वालों पर। हे अल्लाह! तू क्षमा और कृपा करते हुए उनके साथ हमें भी शामिल करले। हे महान कृपालु!!

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! ह़ाजियों के ह़ज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

दशम उपदेश

ईद़-उल-अज़ह़ा (03)

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اَللهِ وَبَرَكَاتُهُ!

الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد. الله أكبر عدد من حج واعتمر، الله أكبر عدد ما هلل حاج وكبر. الله أكبر عدد حبات الرمال وورق الشجر وعدد مكنون الجبال وقطر المطر. الله أكبر عدد خلقه ورضا نفسه وزنة عرشه ومداد كلماته. الله أكبر عدد ما خلق في السماء وعدد ما خلق في الأرض وعدد ما بين ذلك، وعدد ما هو خالق، الله أكبر كبيراً والحمد لله كثيراً وسبحان الله بكرة وأصيلاً.

الحمد لله الذي بنعمته تتم الصالحات. سبحانه الذي أعطى كل شيء خلقه ثم هدى، وبين لهم سبل الرشاد من الردى.

الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير. شرع لعباده منهج حق لا يزيغ عنه إلا هالك. وأشهد أن محمداً عبده ورسوله وصفيه وخليله وخيرته من خلقه قام بدين ربه تعالى وأبانه لكل سالك. ختم الجليل به معشر الأنبياء، وأجرى عليه العزيز سبل الهدى، فكان إمام الحنفاء. صلى الله عليه وعلى آله وصحبه وأتباعه وسلم تسليماً كثيراً. أما بعد!

अल्लाह के भक्तो! महा पवित्र अल्लाह का अपने शक्तिशाली ग्रंथ 'क़ुरआन मजीद' में कथन है:

﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًاۚ فِطْرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِي فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيْهَاۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ ٱللَّهِۚ﴾

अर्थात: (आप एकाग्रचित्त होकर अपना मुंह धर्म की ओर आकर्षित कर लीजिए, सर्वशक्तिमान अल्लाह की वह प्रकृति जिस पर उसने लोगों की रचना की, सर्वशक्तिमान अल्लाह की रचना में कोई परिवर्तन नहीं।) और सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلْقَيِّمُ﴾

अर्थात: (यही सीधा धर्म है।) अर्थात: यही सत्य तथा सटीक धर्म है, इसका प्रकाश कभी नहीं बुझेगा, जिसके गुणों को कोई हवा मिटा नहीं पाएगी। यह वह धर्म है जिसके माध्यम से सर्वशक्तिमान अल्लाह ने पथ-भ्रष्ट लोगों को सत्य मार्ग दिखाया और उन्हें सत्यता, न्याय, भलाई तथा सच्चाई के मार्ग पर पहुंचा दिया। जिसकी शरीयत (विधि-विधान) पवित्र हैं, जिसकी शिक्षाओं में विनम्रता है और जिसकी सीमाओं तथा आदेशों का पालन करना बहुत ही सरल है। यह वह धर्म है जो व्यापक भलाई लेकर आया, प्रत्येक प्रकार की भलाई तथा अच्छाई को स्थापित किया। यह वह धर्म है जिसने प्रत्येक प्रकार की बुराइयों पर रोक लगाई, प्रत्येक भ्रष्टाचार तथा हानिकारक कारकों को समाप्त किया एवं लोगों के लिए सुधार तथा मार्गदर्शन के पथों को तैयार किया। यदि लोग इस धर्म का पालन करने लगें तो इन्हें देश-प्रदेश में समृद्धि प्राप्त होगी और लोगों में सुधार की भावना जागृत होगी। यह एक ऐसा धर्म है जो लोगों को बुराइयों तथा नकारात्मक गतिविधियों से सुरक्षित रखता है, उनके

मन को पवित्र करता है, उनके आचरण को निखारता है, अपने चाहने वालों के लिए भलाई के द्वारों को खोल देता है तथा अपने अनुयायियों के लिए सभ्यता और प्रगति को स्थापित करता है। इस धर्म ने एक मनुष्य की स्वयं उसके अंतरात्मा तथा उसकी बुराइयों, उसकी गुप्त आपदाओं, उसकी विनाशकारी गतिविधियों तथा उसके अनाचरण से रक्षा की है। इससे पहले की उसकी रक्षा वह लोग करें जो उसके आस-पास हैं, शत्रुओं तथा विरोधियों से रक्षा करने की तो बात ही अलग है। इस सांसारिक जीवन में लोगों में सुधार तथा पारलौकिक जीवन में नरक से मुक्ति केवल इसी धर्म का पालन करने से संभव है, क्योंकि यह धर्म उस अल्लाह की ओर से अवतरित हुआ है जो परम बुद्धिमान, सर्वज्ञ, सर्वोच्च तथा सब कुछ जानने वाला, सुनने वाला एवं देखने वाला है, यदि यह ना होता तो इस धरती पर मनुष्य का जीवन सुव्यवस्थित नहीं हो पाता, यह धर्म सम्पूर्ण शिक्षाओं तथा जनहितों के साथ अवतरित हुआ है, अतः जब भी लोग इससे लापरवाही बरतेंगे वो स्वयं पथ-भ्रष्ट होंगे और लोगों को भी पथ-भ्रष्ट कर देंगे।

أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

अल्लाह के भक्तो! ह़ज्ज एक महान धार्मिक प्रतीक है जिसमें सर्वशक्तिमान अल्लाह के धर्म की ऐसी विशेषताएं खुलकर सामने आती हैं जिन्हें उसने अपने भक्तों के लिए पसंद किया है तथा जिस धर्म को उसने अपने सम्पूर्ण सृष्टि के लिए सरल बना दिया है।

ह़ज्ज के भीतर उसकी विशेषताओं में जो **प्रथम विशेषता** पूर्णतः स्पष्ट होकर सामने आती है वह शुद्ध एकेश्वरवाद की विशेषता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَٰهِيمَ مَكَانَ ٱلْبَيْتِ أَن لَّا تُشْرِكْ بِى شَيْـًٔا وَطَهِّرْ بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلْقَآئِمِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ ٢٦
وَأَذِّن فِى ٱلنَّاسِ بِٱلْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ٢٧ لِّيَشْهَدُوا۟ مَنَٰفِعَ لَهُمْ
وَيَذْكُرُوا۟ ٱسْمَ ٱللَّهِ فِىٓ أَيَّامٍ مَّعْلُومَٰتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّنۢ بَهِيمَةِ ٱلْأَنْعَٰمِ ۖ فَكُلُوا۟ مِنْهَا وَأَطْعِمُوا۟ ٱلْبَآئِسَ ٱلْفَقِيرَ ٢٨
ثُمَّ لْيَقْضُوا۟ تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا۟ نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا۟ بِٱلْبَيْتِ ٱلْعَتِيقِ ٢٩ ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَٰتِ ٱللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ
لَّهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ ٱلْأَنْعَٰمُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَٱجْتَنِبُوا۟ ٱلرِّجْسَ مِنَ ٱلْأَوْثَٰنِ وَٱجْتَنِبُوا۟ قَوْلَ
ٱلزُّورِ ٣٠ حُنَفَآءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِۦ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ ٱلسَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ ٱلطَّيْرُ أَوْ تَهْوِى
بِهِ ٱلرِّيحُ فِى مَكَانٍ سَحِيقٍ ٣١ ﴾

अर्थात: (और जबकि हमने इब्राहिम अ़लैहिस्सलाम के लिए कअ़बह के स्थान को इस शर्त पर आवंटित कर दिया कि मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं बनाना, मेरे घर का तवाफ़ (चक्कर) लगाने वालों, रात में (तहज्जुद) की नमाज़ अदा करने वालों, शीश झुकने वालों तथा रुकु करने वालों के लिए पवित्र रखना और लोगों में ह़ज्ज की पुकार कर दे, लोग तेरे पास पैदल भी आएंगे, दुबले पतले ऊंटों पर भी और दूर के समस्त रास्तों से आएंगे, वे लोग अपने लाभ की प्राप्ति को आ जाएं, कुछ निर्धारित दिनों में कौन पालतू मवेशियों पर सर्वशक्तिमान अल्लाह के नाम का स्मरण करें जो उसने उन्हें दिए हैं, फिर आप स्वयं भी खाएं एवं भूखे निर्धन लोगों को भी खिलाएं।फिर वे अपना मैले-कुचैले दूर करें एवं अपनी मिन्नतें पूरी करें

और अल्लाह के पुराने घर का तवाफ़ (चक्कर) लगाएं।यह है और जो कोई अल्लाह के प्रतीकों का सम्मान करे उसके लिए उसके पालनहार के पास सर्वश्रेष्ठ उपहार है और तुम्हारे लिए चौपाये पशु वैध कर दिए गए हैं उनको छोड़कर जिनका तुम्हारे सामने स्पष्ट रूप से उल्लेख कर दिया गया है और तुम्हें मूर्तियों की अपवित्रता से बचते रहना है। अल्लाह के एकेश्वरवाद को मानते हुए उसके साथ किसी को साझीदार बनाने से बचते हुए, सुनो! सर्वशक्तिमान अल्लाह के साथ किसी को साझीदार बनाने वाला ऐसा ही है जैसे कोई आकाश से गिर पड़े, फिर उसे पक्षियां उचक ले जाएंगे अथवा हवा कहीं दूर ले जाकर फेंक देगी।) एकेश्वरवाद का तात्पर्य सरदार तथा नींव का है और सर्वशक्तिमान अल्लाह की इच्छा अनुसार इस सत्यता पर आधारित धर्म को स्थित करने तथा इसके सच्चे मार्गदर्शन को स्थापित करने हेतु एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, अतः ऐसे जीवन का कोई आधार तथा मूल्य नहीं जिसमें शुद्ध एकेश्वरवाद तथा सटीक आस्था नहीं पाई जाती हो।

दूसरी विशेषता तक़्वा (धर्मपरायणता) है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ شَعَـٰٓئِرَ ٱللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقۡوَى ٱلۡقُلُوبِ ٣٢ ﴾

अर्थात: (यह सुन लिया, अब यह सुनो! अल्लाह के प्रतीकों का जो सम्मान करे उसके हृदय के भयभीत रहने के कारण यह है।) और महा पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿ ٱلۡحَجُّ أَشۡهُرٞ مَّعۡلُومَـٰتٞۚ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلۡحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي ٱلۡحَجِّۗ وَمَا تَفۡعَلُواْ مِنۡ خَيۡرٖ يَعۡلَمۡهُ ٱللَّهُۗ ﴾

अर्थात: (जो व्यक्ति उनमें ह़ज्ज को अनिवार्य कर ले वह अपनी पत्नी से संभोग करने, बात करने और लड़ाई-झगड़ा करने से बचता रहे। तुम जो भी सुकर्म करोगे सर्वशक्तिमान अल्लाह उसे भली-भांति अवगत है।)

यह वह व्यापक सलाह है जो समस्त प्रकार की नकारात्मक गतिविधियों से रोकने वाली है। अतः ऐसा धर्म जिसमें तक़्वा (धर्मपरायणता) ना हो, वह ऐसे शरीर के समान है जिसमें आत्मा ना तथा बुद्धि ना हो और ऐसे जीवन के समान है जिसमें कोई मार्गदर्शन तथा कोई सिद्धांत ना हो। तक़्वा (धर्मपरायणता) वह शक्ति है जिसके माध्यम से शारीरिक अंग सही दिशा में कार्य करते हैं, सर्वशक्तिमान अल्लाह की इच्छा अनुसार व्यवहार तथा आचरण में सुधार होता है, जिसके माध्यम से मानवता को सौभाग्य प्राप्त होता है, सत्य मार्गदर्शन मानवता के हित में ऐसे साधनों को प्रकट करता है जिनसे संतुष्टि प्राप्त होती है एवं भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप से शांति मिलती है।

तीसरी विशेषता यह है कि ह़ज्ज से ईमान की मिठास का स्वाद मिलता होता है, उस अल्लाह का कथन है जो महान कृपालु तथा दयाल है:

﴿ فَٱجۡعَلۡ أَفۡـِٔدَةٗ مِّنَ ٱلنَّاسِ تَهۡوِيٓ إِلَيۡهِمۡ ﴾

अर्थात: (तू कुछ लोगों के हृदयों को उन लोगों की ओर आकर्षित कर दे।) और हृदय केवल उसी चीज़ की ओर आकर्षित होता है जिसके प्रति उसके भीतर प्रेम होता है।

चौथी विशेषता यह है कि महा पवित्र अल्लाह के प्रति हृदय में भय एवं विनम्रता की भावना उत्पन्न होती है, सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का कथन है:

﴿ وَبَشِّرِ ٱلْمُخْبِتِينَ ٣٤ ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ ﴾

अर्थात: (उन विनम्रता के अपनाने वाले को शुभ संदेश दे दीजिए, जिनके समक्ष जब सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण किया जाता है तो उनके हृदय थर्रा जाते हैं।)

पांचवी विशेषता यह है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रतीकों के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न होता है, सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का कथन है:

﴿ ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَٰتِ ٱللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُۥ عِندَ رَبِّهِۦۗ ﴾

अर्थात: (यह है और जो कोई अल्लाह के प्रतीकों का सम्मान करे उसके लिए उसके पालनहार के पास सर्वश्रेष्ठ उपहार है।)

छठी विशेषता यह है कि आजीविका की प्राप्ति तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह के अत्यधिक स्मरण के माध्यम से सांसारिक तथा धार्मिक लाभ एक साथ प्राप्त होते हैं, उस अल्लाह का कथन है जिसकी शक्ति कण-कण में दिखाई देती है:

﴿لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُواْ فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْۚ فَإِذَآ أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَٰتٍ فَٱذْكُرُواْ ٱللَّهَ عِندَ ٱلْمَشْعَرِ ٱلْحَرَامِۖ وَٱذْكُرُوهُ كَمَا هَدَىٰكُمْ وَإِن كُنتُم مِّن قَبْلِهِۦ لَمِنَ ٱلضَّآلِّينَ ١٩٨﴾

अर्थात: (अपने पालनहार के अनुग्रह को खोजने में तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा। जब तुम लोग अ़रफ़ात नामक स्थल से लौटो तो मश्अ़र-ए-ह़राम के पास सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण करो, और उसका स्मरण इस प्रकार करो जैसा कि उसने तुम्हें मार्गदर्शन दिया, हालांकि तुम इससे पहले रास्ते से भटक गए थे।)

सातवीं विशेषता यह है कि पृथ्वी के सबसे पवित्र स्थान पर सर्वशक्तिमान अल्लाह की कृपाओं की चाहत होती है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ثُمَّ لْيَقْضُواْ تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُواْ نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُواْ بِٱلْبَيْتِ ٱلْعَتِيقِ ٢٩﴾

अर्थात: (फिर वे अपना मैले-कुचैले दूर करें एवं अपनी मिन्नतें पूरी करें और अल्लाह के पुराने घर का तवाफ़ (चक्कर) लगाएं।)

आठवीं विशेषता यह है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह के प्रति मुसलमानों के बीच भाईचारे का संबंध सशक्त होता है और यह बात उस समय स्पष्ट होकर सामने आती है जब सभी लोग एक इन शब्दों की पुकार उच्च स्वर के साथ लगते हैं:

لبيك اللهم لبيك، لبيك لا شريك لك لبيك، إن الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك.

अर्थात: "हे अल्लाह हम उपस्थित हैं, हम उपस्थित हैं, तेरा कोई साझीदार नहीं, हम उपस्थित हैं, समस्त प्रकार की प्रशंसा, वरदान तथा शासन तेरे ही लिए है, तेरा कोई साझीदार नहीं।"

नौवीं विशेषता यह है कि महा पवित्र अल्लाह के लिए पूजा-आराधना करते हुए (सामने आने वाली कठिनाइयों) पर धैर्य रखने का अवसर प्राप्त होता है, उस अल्लाह का कथन है जिसका नाम बहुत ही पवित्र है:

﴿وَٱلصَّٰبِرِينَ عَلَىٰ مَآ أَصَابَهُمْ وَٱلْمُقِيمِي ٱلصَّلَوٰةِ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ٣٥﴾

अर्थात: (उन्हें जो कठिनाई पहुंचे उस पर वह धैर्य से काम लेते हैं, नमाज़ अदा करते हैं और हमने जो उन्हें जीविका प्रदान की है उनमें से दान-पुण्य करते हैं।)

दसवीं विशेषता यह है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह के पास जो सांसारिक तथा पारलौकिक भलाइयां एवं उपकार हैं उनकी प्राप्ति के प्रति मन में इच्छा जागृत होती है, महा पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي ٱلْأٓخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴿٢٠١﴾﴾

अर्थात: (और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें इस संसार में भलाई दे तथा परलोक में भी भलाई प्रदान कर एवं हमें नरक के प्रकोप से बचा दे।)

أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

ग्यारहवीं विशेषता यह है कि इस अवसर पर बलि के पशु को वध किया जाता है, सर्वश्रेष्ठ अल्लाह का कथन है:

﴿وَٱلْبُدْنَ جَعَلْنَٰهَا لَكُم مِّن شَعَٰٓئِرِ ٱللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ﴾

अर्थात: (बलिदान के ऊंट में हमने तुम्हारे लिए सर्वशक्तिमान अल्लाह का प्रतीक बनाया है, उनमें तुम्हारे लिए लाभ है।) इसमें सांसारिक लाभ यह है कि इसके माध्यम से हमें इस सांसारिक जीवन में अच्छे खान-पीन के कुछ आहार प्राप्त हो जाते हैं एवं पारलौकिक लाभ यह है कि पशु को वध करके सर्वशक्तिमान अल्लाह के आदेश के अनुपालन का अवसर प्राप्त होता है इसी प्रकार हमें उसकी पूर्ण भक्ति करने का भी अवसर मिल जाता है। सदाचारी पैग़म्बर ﷺ की ह़दीस में उनका कथन है: "नह़ के दिन (पशु को बलि देने के दिन) सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट एक व्यक्ति का सबसे प्रिय कार्य रक्त बहाना है, प्रलय दिवस में बलिदान के पशु अपनी सींगों, बालों तथा खुरों के साथ आएंगे, बलिदान का रक्त धरती पर गिरने से पूर्व ही स्वीकार्य का स्थान प्राप्त कर लेता है, इसलिए हर्षित होकर बलिदान दिया करो।"

एक ऐसा बलिदान जिसे एक मुस्लिम व्यक्ति सभी शर्तों का ध्यान रखते हुए कि उस बलिदान के मवेशी का संबंध ऊंट, गाय, भेड़ अथवा बकरी से हो, निर्धारित आयु को पहुंचा हुआ हो तथा बलिदान देने के निर्धारित समय का भी भरपूर ध्यान रखा गया हो, अर्थात: ईद-उल-अज़्हा की नमाज़ के बाद से लेकर ज़िल्हिज्जा कि तेरहवीं तिथि के सूर्यास्त से पूर्व मवेशी को वध किया गया हो, इस आशा के साथ सर्वशक्तिमान अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत करता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह इसके माध्यम से उसे समस्त प्रकार की कठिनाइयों से मुक्ति दिलाएगा एवं उसके पापा को क्षमा कर देगा।

ऐ लोगो! सर्वशक्तिमान अल्लाह हम सभी को दोनों पवित्र तथा सम्मानित प्रकाशनाओं (क़ुरआन और सुन्नत) से लाभान्वित करे जो अल्लाह की (आकाश से पृथ्वी तक) फैली हुई रस्सी (सशक्त सहारा) है और उसका शाश्वत रहने वाला रहस्योद्घाटन है।

अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह पवित्र ग्रंथ क़ुरआन तथा ह़दीस के निर्देशों से मुझे और आप सभी को कृपा तथा दया करते हुए लाभान्वित करे। जो कुछ मैंने कहा उन सारी बातों को आप सभी ने ध्यानपूर्वक सुना। मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं इसलिए आप लोग भी उससे क्षमा मांगिए क्योंकि वह सबसे अधिक क्षमा करने वाला एवं महान कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد. الله أكبر كبيراً والحمد لله كثيراً وسبحان الله بكرة وأصيلاً.

الحمد لله تعالى الذي أعز أهل الطاعة وجعلهم يداً على من سواهم، وأذل أهل المعصية وجعلهم عبره لغيرهم. وأشهد أن لا إله إلا الله وأشهد أن محمداً رسول الله ﷺ. أما بعد!

मेरे प्रिय भाइयो! **तेरहवीं विशेषता** यह है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह के मार्गदर्शन को दृढ़ता पूर्वक अपनाने तथा उसके पवित्र शरीयत (विधि-विधान) को लागू करने का अवसर प्राप्त होता है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا لِّيَذْكُرُوا۟ ٱسْمَ ٱللَّهِ ﴾

अर्थात: (और प्रत्येक समुदाय के लिए हमने बलिदान देने की एक विधि निर्धारित की है ताकि वे उन मवेशियों पर सर्वशक्तिमान अल्लाह का नाम ले सकें।) और ह़ज्ज इसी विशेष अनुष्ठान नाम है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपनी इस शरीयत (विधि-विधान) के माध्यम से सुधार, मोक्ष तथा सफ़लता की और मानव जाति के बीच सही तथा उचित संबंधों को स्थापित करने की गारंटी प्रदान की है एवं न्याय, भाईचारा, समानता तथा आपसी प्रेम की सच्ची अवधारणा को सिद्ध किया है, इसी प्रकार सद्गुण, व्यवहार तथा शिष्टाचार के आधार को फैलाया तथा प्रसारित किया है और ऐसे ही अश्लीलता, मूर्खता और विनाश के प्रसारण तथा उनके रास्तों को ध्वस्त कर दिया और अपराध के स्रोतों को सुखाकर उस पर रोक लगा दी है यही महा पवित्र अल्लाह की शरीयत (विधि-विधान) है।

मेरे प्रिय ह़ाजी भाइयो! ह़ज्ज से संबंधित जो अनुष्ठान शेष रह गए हैं उन्हें सम्पूर्ण विनम्रता, संतुष्टि तथा शांति के साथ संपन्न कीजिए। सर्वशक्तिमान अल्लाह आपके इन सुकर्मों को स्वीकार करे!

अल्लाह के भक्तो! यदि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने मानव जाति के लिए एक पर्याप्त मार्गदर्शन के रूप में कोई विधि-विधान स्थापित नहीं किया होता तो इसके अतिरिक्त लोगों को कोई भी सुरक्षित शरण नहीं मिलता। सर्वशक्तिमान अल्लाह के शक्तिशाली ग्रंथ पवित्र क़ुरआन में उसका कथन है:

﴿ إِنَّ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانَ يَهْدِى لِلَّتِى هِىَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ٱلَّذِينَ يَعْمَلُونَ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾ ﴾

अर्थात: (निःसंदेह यह पवित्र क़ुरआन उस मार्ग की ओर मार्गदर्शन करता है जो सबसे सीधा है और मोमिन (विश्वासी) लोगों को जो अच्छे-अच्छे कार्य करते हैं इस बात का शुभ संदेश देता है कि उनके लिए बड़ा ही महान परिणाम है।)

मेरे प्रिय भाइयो! उ़लमा (धार्मिक विद्वान लोग) धरती पर बसने वालों के लिए सुख-शांति का माध्यम हैं क्योंकि उन्हीं के कारण सच्चे धर्म की पहचान हुई, उनसे ही ज्ञान प्राप्त किया जाता है, शासन-प्रशासन तथा विभिन्न समाज के लोग उन्हीं के पास जाते हैं, समस्त समुदाय के लोगों का उत्थान उन्हीं के कंधों पर होता है, विशेष कर प्रत्येक ऐसे समय में जब चारों ओर संकट ही संकट तथा अंधकार होता है। पता चला कि जब भी लोग अज्ञानी लोगों से मार्गदर्शन लेंगे, उपद्रवियों से ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा सामान्य अज्ञानी लोगों के आस-पास रहेंगे तो निश्चित है कि लोगों का धर्म नष्ट हो जाएगा, ज्ञान विलुप्त हो जाएगा

एवं ऐसे समय में धरती पर रहने वाले लोगों की सुरक्षा असंभव हो जाएगी तथा ऐसी स्थिति में समाज का भविष्य अस्थिर हो जाएगा, अफ़वाह फैलाने वाले लोग ऐसी ही स्थिति की इच्छा रखते हैं तथा इसके लिए शत्रु, विरोधी तथा पाखंडी लोग निरंतर प्रयास करते रहते हैं।

أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।

ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! आप लोगों के ऊपर **पांच बातों** के प्रति विशेष ध्यान रखना अनिवार्य है:

प्रथम बात:- आप लोगों के ऊपर अनिवार्य है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सच्चे समुदाय के लोगों को जो आदेश दिया है उसको सिद्ध करें जिन्हें लोगों की भलाई के लिए प्रकट किया गया है, सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन कुछ इस प्रकार है:

﴿ وَٱعْتَصِمُواْ بِحَبْلِ ٱللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُواْۚ ﴾

अर्थात: (तुम सभी लोग मिलकर सर्वशक्तिमान अल्लाह की रस्सी को कठोरता पूर्वक थाम लो और आपस में फूट ना डालो।) सर्वशक्तिमान अल्लाह की सशक्त रस्सी को, उसके सीधे रास्ते को तथा उसकी न्यायसंगत पद्धति को दृढ़ता पूर्वक अपनाना ही वास्तविक मुक्ति तथा स्पष्ट सफ़लता है। इसके फल स्वरुप सर्वशक्तिमान अल्लाह के धर्म को मधुर वाणी, उचित व्यवहार के साथ पहुंचाना, पवित्र शरीयत (विधि-विधान) की शिक्षाओं को सटीक अवधारणा के साथ समझना और धार्मिक साक्ष्यों के बीच विरोधाभास उत्पन्न करने से बचाना आवश्यक हो जाता है।

दूसरी बात:- सर्वशक्तिमान अल्लाह के महान उपकारों तथा असीम वरदानों पर उसके आभारी बने, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने आपको जो भी वरदान दिए हैं उन्हें तुच्छ नहीं समझें, इसी प्रकार उसके परोपकारों से लापरवाही ना बरतें, क्योंकि कृतज्ञता व्यक्त करने से वरदानों में वृद्धि होती है एवं आपदाएं तथा कठिनाइयां टल जाती हैं। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْۖ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ٧ ﴾

अर्थात: (और जब तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें सावधान कर दिया है कि यदि तुम कृतज्ञता व्यक्त करते रहोगे तो मैं तुम्हें और अधिक दूंगा एवं यदि तुम अकृतज्ञ बनोगे तो जान लो कि मेरा प्रकोप बड़ा ही कठोर है।) कृतज्ञता हृदय, जीभ तथा शारीरिक अंगों से भी व्यक्त की जाती है और सर्वशक्तिमान अल्लाह ने अपने वरदान के रूप में जो कुछ भी आपको दिया है उनमें से असहाय लोगों के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए उनकी आवश्यकताओं को पूरी करना भी इसमें शामिल है।

तीसरी बात:- आप पथ-भ्रष्टताओं, गुटबाज़ियों तथा विरोधाभासों से सावधान रहिए, इसी प्रकार शासकों की आज्ञाकारिता के विरुद्ध गतिविधियों से अपने आप को वंचित रखिए। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ وَأَنَّ هَٰذَا صِرَٰطِي مُسْتَقِيمًا فَٱتَّبِعُوهُۖ وَلَا تَتَّبِعُواْ ٱلسُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِۦۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّىٰكُم بِهِۦ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ١٥٣ ﴾

अर्थात: (यह धर्म मेरा मार्ग है जो कि सीधा है, अतः इस मार्ग पर चलो और दूसरे अन्य मार्गों पर मत चलो क्योंकि वे सभी मार्ग तुमको अल्लाह के मार्ग से भिन्न कर देंगे, सर्वशक्तिमान अल्लाह तुमको दृढ़ता पूर्वक इसका आदेश देता है ताकि तुम संयम-नियम का पालन करो।) ज्ञात हुआ कि सीधा रास्ता केवल एक ही है जिसमें तथा जिसके लिए कोई टेढ़ापन नहीं। जिसने भी इसके अतिरिक्त किसी अन्य को सत्य मार्ग माना वास्तव में वह सीधे रास्ते से भटक गया।

चौथी बात:- एक सच्चा आदर्श पैग़म्बर मुहम्मद ﷺ ही हैं जिनके संबंध में सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ لَّقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ ٱللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ ﴾

अर्थात: (निःसंदेह अल्लाह के पैग़म्बर आपके लिए सर्वश्रेष्ठ आदर्श हैं।) एक ऐसा सच्चा मार्गदर्शक जो एक मुसलमान के वास्तविक चरित्र को उजागर करता है।

पांचवी बात:- अपने बाल-बच्चे तथा घर-परिवार के लोगों के प्रति अपने आप से इस बात का प्रण लीजिए कि आप उनका पालन-पोषण तथा उनकी देख-रेख अच्छे ढंग से करने के साथ-साथ उनके अधिकारों का विशेष ध्यान रखेंगे। सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन है:

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قُوٓاْ أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝٦ ﴾

अर्थात: (ऐ मोमिनो (विश्वासियो)! अपने आप को और अपने परिवार के लोगों को उस नरक की आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य तथा पत्थर हैं जिसके ऊपर ऐसे फ़रिश्तों को तैनात किया गया है जो कठोर भाव के हैं तथा वे सर्वशक्तिमान अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते हैं और सर्वशक्तिमान अल्लाह उन्हें जो आदेश देता है उसका वे अनुपालन करते हैं।) इस नरक से मुक्ति आदेशों का अनुपालन करने, वर्जनाओं से वंचित रहने, लोगों को दृढ़ता पूर्वक सच्चाई के मार्ग की ओर आकर्षित करने, मूर्ख लोगों का हाथ पकड़ कर उन्हें बुराई से वंचित रखने से से मिलेगी, ताकि धार्मिक सिद्धांतों की रक्षा हो सके एवं इसके शिक्षाओं की स्थापना हो सके।

फिर आप लोग 'मुज़र' परिवार के व्यक्ति मुहम्मद ﷺ पर दरूद भेजिए जो संसार तथा उनमें पाई जाने वाली समस्त सृष्टियों के सरदार हैं। हे अल्लाह! अपनी कृपा, रक्षा तथा बरकतें उस अ़ब्दुल्लाह के सुपुत्र मुहम्मद ﷺ पर अवतरित कर जो सम्पूर्ण सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं एवं संयमी लोगों के सरदार हैं, इसी प्रकार उनके परिवार जनों पर, उनके सहा़बा (साथियों) एवं उनका अनुसरण करने वालों पर। हे अल्लाह! तू क्षमा और कृपा करते हुए उनके साथ हमें भी शामिल करले। हे महान कृपालु!!

हे अल्लाह! उन समस्त मार्गदर्शकों एवं शासकों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने सत्य मार्ग को अपनाते हुए अपना जीवन यापन किया तथा सत्य के साथ ही वह न्याय करते रहे, हे सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार! ऐसे सभी लोगों से प्रसन्न हो जा जिन्होंने इन मार्गदर्शकों का अनुसरण किया, हे सबसे महान दयावान! उन सभी को क्षमा कर दे, उन सभी पर अपनी कृपा कर दे!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमान को सम्मान दे एवं बहुदेववाद तथा बहुदेववादियों को अपमानित कर और अपने एकेश्वरवाद भक्तों की सहायता कर, समस्त इस्लामी एवं मुस्लिम देशों को समृद्ध तथा संपन्न बना दे।

हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को इस बात की शक्ति दे कि वह तेरे द्वारा अवतरित किए गए विधि-विधान के अनुसार न्याय करें तथा तेरे पैग़म्बर ﷺ के मार्गदर्शन को लागू कर सकें, उन सभी शासकों के हृदय को आपस में जोड़ दे, उन्हें उनकी प्रजा के प्रति कृपालु बना तथा इस बात की शक्ति दे कि वह हर ऐसा काम करें जो तुझे प्रिय हो एवं जिससे तू प्रसन्न हो।

हे अल्लाह! जो हमारे लिए श्रेष्ठ हो उसका चुनाव कर एवं स्वयं हमारे लिए भलाई को चुन ले, हमें मार्गदर्शन दे और तेरे मार्गदर्शन पर चलना हमारे लिए आसान कर दे, इस बात के प्रति हमारी सहायता कर हम तेरा स्मरण कर सकें, तेरा आभार व्यक्त कर सकें और सुंदरता के साथ तेरी आराधना है तथा उपासना कर सकें।

हे अल्लाह! हमें सांसारिक एवं धार्मिक मामलों की समझ प्रदान कर दे, मुसलमान की स्थितियों को ठीक कर दे, पैग़म्बर ﷺ के अनुयायियों की आवश्यकताओं की पूरी कर दे और हे महान कृपालु तथा दयावान! उनके सभी मामलों का श्रेष्ठ परिणाम प्रदान कर दे।

हे अल्लाह! हाजियों के हज्ज को, उ़मरा करने वाले के उ़मरा को और पूजा-आराधना करने वालों की धार्मिक कार्यों को स्वीकार कर ले।

हे अल्लाह! उसे स्वीकार्य ह़ज्ज, सराहनीय प्रयास, क्षमा प्रति पाप तथा ऐसा व्यापार बना दे जिसमें किसी प्रकार का घाटा ना हो। हे हृदयों में छुपे हुए भेदों को जानने वाले!

ऐ अल्लाह के भक्तो! सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि तुम न्याय करो, भलाई करो, नातेदारों के अधिकारों को पूरा करो और वह तुम्हें बुराइयों, अश्लीलता तथा अत्याचार करने से रोकता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि समझदार बन जाओ, तुम लोग महान तथा महिमा वान अल्लाह का स्मरण करो वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर उसका आभार व्यक्त करो वह तुम्हें और अधिक प्रदान करेग और ध्यान रखो कि सर्वशक्तिमान अल्लाह का स्मरण सबसे महान पुण्य है और सर्वशक्तिमान अल्लाह तुम्हारे काम-काज से भली-भांति अवगत है।

أكبر الله أكبر، الله أكبر الله أكبر لا إله إلا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد.

अर्थात: अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, समस्त प्रकार की प्रशंसा उसी के लिए है।